* नमोऽस्तु रामाय *

# भक्त शिरोमणि श्रीधन्ना

श्रीमठ

पंचगंगा, वाराणसी

Scanned with CamScanner

लेखक व सम्पादनकर्त्ता
महन्त बदरीदास साधु (गोलिया)
श्री गोवर्धन नाथ जी का मंदिर
बेनावतों का बास, गाँधी गली
जोधपुर – 342002 (राजस्थान)

प्रकाशक : जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्मारक न्यास
पंचगंगा, वाराणसी

प्रथम संस्करण : 2005

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

मुद्रक :
सुरभि प्रिंटर्स
इण्डियन प्रेस कालोनी
वाराणसी

Scanned with CamScanner

# भूमिका

भक्तराज श्री धन्ना के नाम से और उनके चरित्र से हम सभी थोड़े बहुत परिचित ही हैं। एक छोटी से घटना से श्री धन्ना जी के जीवन में एक महान क्रान्ति हो गई और वही उनके भगवत्साक्षात्कार का कारण भी बन गई। पाँच साल का छोटा सा बालक भगवान के पथ में किस निष्ठा के साथ जा रहा है, यह सब हम सभी के लिए सर्वथा अनुकरणीय है। साधनकाल में कैसे–कैसे प्रलोभन उनके सामने आये पर एक भी उसे डिगा नहीं सका। अन्त में स्वयं भगवत्सल भगवान को उसके सम्मुख प्रगट होना पड़ा।

इन्हीं भक्तराज श्री धन्ना जी का चरित्र इस छोटी से पुस्तक में अपनी बुद्धि अनुसार लिखकर आपके सनमुख रखने का दु:साहस किया है। आशा है आप सभी इसको ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करेंगे।

इसमें श्लोक, कवित्त, छन्द, चौपाई, दोहा अर्थ सहित लिखा है।

लेखक व सम्पादक
महन्त बदरीदास साधु (गोलिया)

Scanned with CamScanner

# दो शब्द

सर्वप्रथम पाठकगण व श्रोतागणों से मैं हाथ जोड़कर नमस्कार करता हूँ उससे भी अग्रणीय अज्ञानी, नास्तिक तथा जो दूसरों में त्रुटि बताकर अपने को सर्वोपरि समझता हो।

पुस्तक लिखने से पहने कुछ प्रार्थना आप लोगों से करना चाहता हूँ वह यह है कि विधाता के लेख जो हैं उसे कोई नहीं मिटा सकता। उदाहरणार्थ त्रेतायुग के श्रीराम, द्वापरयुग के श्रीकृष्ण जिनको संसार भगवान का अवतार मानते हैं। तात्पर्य यह है कि जिसने उदर से जन्म लिया है वह अमर इस नाशवान शरीर से कदापि नहीं हो सकता है। जब जन्म होता है तो कर्मों को विधाता पहले ही लिख देता है, शरीर से कर्म बनता नहीं किया जाता है, कर्म से शरीर बनता है। मसलन यह कि विधि का विधान पहले तैयार होता है शरीर बाद में। सर्वशक्तिमान श्रीराम तथा श्रीकृष्ण थे उनसे भी विधि के विधान को पलटा नहीं जा सका। प्रमाण में सामर्थ्यवान रावण को देखो श्री लक्ष्मण जी ने अन्तकाल के समय में श्रीरामचन्द्र जी की आज्ञा से जाकर पूछा कि आपकी आखरी इच्छा कुछ हो तो बतलाइये। रावण ने कहा कि मेरे को चार काम करने थे वह बाकी रह गये हैं। पहला समुद्र के जल को मीठा करना, दूसरा आग से धुआँ हटाना, तीसरा सोने में सुगन्ध बनाना, चौथा मृत्युलोक से स्वर्ग तक सीढ़ी बनाना। श्री लक्ष्मण जी ने पूछा – आप सामर्थ्यवान होते हुए भी क्यों नहीं कर सके। रावण का जवाब था – मैं एक आदर्श नीतिज्ञ राजा था अतः यह कार्य अपनी शक्ति से पूर्ण कर देता तो विधि का विधान पलट जाता। इसको अनुचित समझकर नहीं किया। विधान के अनुसार ही कार्य होता रहे वही कार्य सच्चा होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मुझे भी शायद इसी कारणवश अपने स्थान से हटकर दूर दूर तक काफी कठिनाइयों को सहन करते हुए भ्रमण करना पड़ा था। मगर

Scanned with CamScanner

आज जब यह कार्य पूर्ण होते देख रहा हूँ तब बार–बार प्रभु को इसके लिए धन्यवाद देता हूँ। संयोगवश अगर मुझे पहले इसकी खबर हो जाती कि यह कार्य भारतवर्ष भ्रमण करने के बहाने से पूर्ण होगा तो शायद यह मैं न कर पाता। अभी भी यह कार्य स्वजातीय कई महानुभावों की प्रबल इच्छा से पूर्ण हो रहा है।

सब से नम्र निवेदन यह है कि भक्तराज श्री धन्ना जी का चरित्र चाहे वह सूक्ष्म हो अथवा विस्तार पूर्वक हो सभी जानते ही हैं। मगर अलग से इनके जीवन चरित्र की कोई पुस्तक मेरे न तो नजरों में आई और न सुनने में आई। हाँ एक छोटी से पुस्तक (धन्ना भक्त की परिचरी) मेरे परम पूज्य गुरु महन्त जी श्री हरीदास जी (गोलिया) ने कुछ वर्षों पूर्व वि. सं. 1990 में लिखी थी। अब इन्हीं भक्तराज श्री धन्ना जी का चरित्र इस पुस्तक में बहुत ही सीधी सादी परन्तु कुछ प्रभावशाली भाषा में बहुत कुछ अपनी बुद्धि व सामर्थ्यानुसार अनेक छोटी–बड़ी पुस्तकों से आधार व सामग्री ग्रहण कर तथा श्री धन्ना जी के जन्मस्थान जाकर पूछताछ की व आँखों से सभी हालातों का वर्णानुसार देखकर यह बहुत सुन्दर वस्तु समझकर आप लोगों के समक्ष रखी है। वह सब प्रेरणा मुझे मेरे गुरु महाराज की पुस्तक से मिली। मन की प्रबल इच्छा, शरीर की लगन की कामना से पूर्ण होने जा रहा है। मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि इस पुस्तक को पाठक (ग्रहणकर्त्ता) बड़े उत्साह से लेकर पठनकर श्री धन्ना जी का अनुसरण करने की चेष्टा करेगा।

आशा है कि श्री धन्ना जी के चरित्र से पाठकों का अन्तःकरण शुद्ध होगा तथा चित्त में साधना की लहरे उठेगी व प्रेम भक्ति का अंकुर उत्पन्न होगा।

इस पुस्तक में जो अशुद्धि व त्रुटि हो तो पाठकगण व श्रोतागणों से करबद्ध प्रार्थना है कि उसे दुरुस्त करने के लिए हमें अपने सुझाव दें ताकि अगले संस्करण में सुधार किया जा सके।

इति

लेखक व सम्पादनकर्त्ता
महन्त बदरीदास साधु

Scanned with CamScanner

# विषय–सूची


| | |
|---|---|
| भूमिका | 3 |
| दो शब्द | 4 |
| गुरु–वन्दना | 7 |
| गणेश सरस्वति वन्दना | 8 |
| निरांकार–निरंजन वन्दना | 8 |
| विष्णु व कृष्ण राम–वन्दना | 9 |
| पाठकों से नम्र निवेदन (मात्र पहिचान) | 9 |
| साधु–सन्तों का कर्त्तव्य और आचार–विचार | 11 |
| श्री राममन्त्र राज परम्परा व कुछ शिष्य वंशावली | 12 |
| महात्माओं के जन्म के बारे में जानकारी | 16 |
| स्वामी अनन्तानन्द जी के पदों का विवरण | 22 |
| पुस्तकों के नाम | 46 |
| धन्ना भक्त की रवाँनगी | 47 |
| श्री रामगुण चालीसा | 49 |
| श्री रामचन्द्र जी की स्तुति | 52 |
| सेवा महात्म्य कीर्तन | 53 |
| आरती श्री धन्ना जी की | 55 |


Scanned with CamScanner

# ।। श्री गुरू वन्दना ।।

श्लोक – गुरूः ब्रह्मा, गुरूः विष्णु, गुरूः देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परः ब्रह्म, तस्मै श्री गुरूवै नमः।।

अर्थ – गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही देवों के देव महादेव हैं। गुरू ही साक्षात् परःब्रह्म हैं, ऐसे श्री गुरू जी को मेरा नमस्कार है।

श्लोक – बिनां गुरूं नमस्कृत्य, हरिं नमस्करोतियः। न पश्यन्ति हरिस्तस्य गुखं चापि कदाचन।।1।। श्रुतिमुखं गुरोर्वाक्यं, पुजा मुलं गुरोः पदम्। धर्म मुलं गुरोः सेवा शुभ मुलं गुरोः कृपा।।2।। गुरूपदेशमार्गेण, पूजीय त्वैव कैशवम्। प्राप्नोति वांछितं सर्वं नान्यथा भुधरात्मजे।।3।।

अर्थ – जो बिना गुरू को नमस्कार किये ही हरि को दण्डवत करता है ऐसे पुरूष के मुख को हरि कभी नहीं देखना चाहते हैं। गुरू के वचन को वेद–पुराण मानना, गुरू के चरणों की पूजा को मूल मानना यानी सर्वप्रथम गुरू की पूजा करना। गुरू की सेवा को धर्म मानना, गुरू की कृपा ही शुभ फलों को देने वाली है। गुरू के उपदेश से ही हरि की पूजा करना। उनके बताये रास्ते के बिना रस धरातल (पृथ्वी) पर सब कुछ किया हुआ व्यर्थ है।

आदि देव महादेव जी ने भी अपने पुत्र कार्तिकेय को गुरू बनाने के लिए बाहर भेजा था और उन्होंने एक गुरू की बजाय 21 गुरू किये थे। कहने का तात्पर्य यह है कि जिसने गुरू नहीं किया है वह नुगरा कहलाता है । जैसे पात्र के बगैर कुपात्र। अतः गुरू बनाना अवश्य चाहिए।

श्लोक – ऋ गुरूदेवाय वि....हि, परब्रह्माय धीमहि, तन्नो गुरूः प्रचोदयात्।

Scanned with CamScanner

# ।। श्री सरस्वती वन्दना ।।

कवित्त – माता त्रिलोक पूजिता महा सरस्वती,
निजभक्त के चित्त में सदा रहो द्विराजति।
अतिशाप हो कि ताप हो कि घोर पाप हो,
तत्काल ही विलीन हो जहाँ कि आप हो।।1।।
ब्रह्मादि देवता करे पदाभि वन्दना,
जगदम्ब ! आपकी करे गुणाभिवन्दना।
वाणी–विलास में सभी प्रवीण दीखते,
उनसे प्रणाम पाठ का प्रभाव सीखते।।2।।
पद–दम्भ–लीन हंस भी सुरेशी! आपका,
जल दूध के विवेक में कभी नहीं थका।
तो क्या पदाम्बुजश्रयी सुभक्त आपके,
गुण दोष के विवेक में कदापि क्या भंके।।3।।
जो आपके कराब्ज के सदा अधीन है,
वह दोष–हीन–दीन भी सदा नवीन है।
तो आपके कराब्ज का सदा पला हुआ है
मैं दोष से भरा–जरा कभी भला हुआ?।4।।
सम–मानगान–मान से त्रिलोक मोहिनी,
करूना कटाक्ष पान से सुकाम दोहनी।
तुम कल्पवल्लि देवि! हो वर प्रदान की,
असमान खान हो तुम्हीं प्रधान ज्ञान की।।5।।
विद्या प्रदान कीजिए हमें सरस्वती,
निज भक्त मान लीजिए हमें सरस्वती।
गुण–खान ज्ञान खान हो बखान क्या करें,
करने प्रणाम ही, गुणानुगान क्या करें।।6।।
हे आपकी प्रिया तिथि बसंत पंचमी,
जो आज ही मनाय तो कभी न हो कमी।
हम भारती! सु–भारती बनें,
आनन्द नित्य हो तभी हृदव्रती बनें।7।।

(निराकार–निरंजन वन्दना)

श्लोक – करार विन्देन पदार विन्दुं, मुखार विन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटः शववानम्, बालं मुकुन्दं शिरसा नमामि।।

Scanned with CamScanner

## ।। श्री विष्णु वन्दना ।।

छन्द– ऋ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभागं।। लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं, योगभिर्ध्यानगम्यं। वन्दे भव भय हरणं, सर्व लोकैकनाथं।।

## ।। श्री कृष्ण वन्दना ।।

श्लोक–कस्तुरी तिलकं ललाट पटले, वक्षस्थले कौस्तुभं। नासाग्रे वरी मौक्तिकं करतले, वेणु करे कंकणं। सर्वांग हरि चन्दनं सुललितं, कण्ठे च मुक्तावलि। गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते, गोपाल चुड़ामणि।।

## ।। श्री राम वन्दना ।।

श्लोक–हे रामा पुरूषोत्तमा गुणनिधे, दामोदरा माधवा। हे कृष्ण कमलापने वदुयते, सीतापते श्रीयते। वैकुण्ठपते चराचरपते, लक्ष्मीपते पाहिमाम्।।

दोहा– त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव शरणं मम देव देव।।

## पाठकों से नम्र निवेदन (मात्र पहिचान)

वैष्णव, वैरागी, स्वामी, साधु, सन्त व महात्मा यह एक मनुष्य के नाम की शोभा बढ़ाता है। हालांकि इससे यह जानकारी जरूर होती है कि अमुक सज्जन कौन हैं।

वैष्णव – जो कि विष्णु का उपासक होता है। वह एक मत है।

वैरागी – जिसने संसार से जानबूझकर नाता तोड़ लिया हो यानी जिसने मालूम होते हुए भी कि मेरे माता–पिता, भाई–बहन, स्त्री, पुत्र–पुत्री आदि हैं। फिर भी उससे सांसारिक सम्बन्ध तोड़ लिया हो और भेष भागा पहनकर भजन में लीन हो गया हो।

स्वामी – जिसने गृहस्थ को छोड़कर भेष धारण कर लिया व कोई स्थान (मंदिर–मठ) इत्यादि में अलग बैठ गया हो।

साधु – जिसमें साधुता के लक्षण विद्यमान हों यानी काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया का लव लेश न हो, शान्त शीतल व शुद्ध

Scanned with CamScanner

आचरण से भगवद्भक्ति करता हो।

सन्त – जिसने जन्म तो गृहस्थ में लिया मगर खुद गृहस्थी न बने और साधुत्व की वृत्ति को धारण कर उसी से अपना जीवन पूर्ण करते हुए भगवद्भक्ति से पार हो।

महात्मा – जिसकी आत्मा महान है और स्वामी–साधु–सन्तों से बढ़कर तपस्वी ज्ञानी हो और अपने प्रभाव से दूसरों का उद्धार करता हो।

तो यह सब सिर्फ पहचान मात्र ही हुई।

उपरोक्त विवरण जो है वह आपको न शिक्षा देना, न इसके लिए बाध्य करना है और न इसको मनवाना है। मुझे जैसा ज्ञात हुआ उसी को बुद्धिअनुसार आपके सामने प्रगट करने की इच्छा हुई है।

त्रुटि के लिए क्षमा योग्य

महन्त बदरीदास साध

Scanned with CamScanner

## साधु व सन्तों का कर्त्तव्य और आचार-विचार

आज कतिपय दिनों से उपरोक्त विषय का पूर्णतः आन्दोलन सा हो रहा है। वस्तुतः परिवर्तनशील इस संसार में सदैव प्रत्येक वस्तु का परिवर्तन हुआ करता है। प्रदेश में रक्खे हुए घट देखने, काग दन्त निरीक्षण करने में। इसी विषय को लेकर के जितने त्याज्य और ग्राह्य व्यवहार हैं उनमें प्रवर्तमान होना पड़ता है। एवं निर्दुष्ट बुद्धि के सद्गुणों से निमन्त्रित होकर व्यवहारज्ञ–जन स्वकीय उन्नति मार्ग में कटिबद्ध होते हैं। जन समुदाय की प्रवृत्ति तीन भागों में विभक्त है। धार्मिक, सामाजिक, नैतिक। आज यहाँ पर यह सोचना आवश्यकीय मालूम होता है कि उक्त तीनों कार्य एक एक के सापेक्ष उन्नति को प्राप्त हो सकते हैं अथवा निरपेक्ष। धर्म–समाज और देश इन तीनों पदार्थों की उन्नति अपेक्षित है। समय का प्राबल्य है। साध्न चाहे कुछ भी हो किन्तु न्याय संगत अवश्य हो। वर्तमान समय में कतिपय महानुभाव भिक्षुक, पतित, कंगाल, मठाधीश, विरक्त और ध्र्माचार्य आदि सबको ही साधु शब्द से कहकर एक करोड़ संख्या बताते हैं। 'ज्वार बाजरा एक ही भाव' इस कहावत के अनुसार सबको एक समान समझकर देश के भार रूप कह बैठते हैं। "ना बालिक साधु न होने पावे, यदि इनका साधू होना बन्द हो जाय तो देश का भी सुधार हो सकता है।" "साध्नोति हितकार्याणीति साधु" सज्जन मात्र साधु पद वाच्य है इत्यादि। उनके पावत्कार्य हैं वे स्वार्थ ही को नहीं किन्तु परार्थ और परमार्थ के लिए भी हों। उदाहरणार्थ मठाधीश साधु धन संजय करते अवश्य हैं परन्तु परमार्थ में भी व्यय करते हैं यह वांछनीय है। यह धन संग्रह याचना से नहीं होकर गृहस्थों की तरह जमीन–जागीर से प्राप्त हुआ होना चाहिए। वैसे तो धन व्यय करने के कई स्रोत हैं मगर शिक्षा के लिए किया गया व्यय बड़ा लाभप्रद माना गया है। विद्या ददादि विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्। पात्रत्वां धनमाप्नोति, धनस्यैव सर्व सुखं भवेत्।।

शुद्धान्तकर्ण पूर्वक विचार करने से ही मालूम होगा। जाति सुधार, देश सुधार की डींग हांकने से नहीं। किसी एक व्यक्ति में प्रमादवश कुछ दोष ही हो तो वह पूरे समाज को दूषित करने में

Scanned with CamScanner

सहायक हो सकता है मगर पूरा समाज उसके कारण से दूषित नहीं कहलाता है। यह एक संसार की प्रणाली ही ऐसी है। इसके लिए हमारा कर्तव्य है कि ऐसे व्यक्तिगत दोषों के सुधारने की चेष्टा करें। इसके साथ ही यह कहना आवश्यक है कि सांसारिक धन भी बहुत अपव्यय में जाता है, गृहस्थी लोग ही विवाह आदि में सैकड़ों नहीं हजारों लाखों रुपये नाच–तमाशे शो आदि में फूंक देते हैं। गृहस्थी में कई प्रकार के कार्य आते हैं मगर आजकल इन्होंने होड़ सी लगा रक्खी है। दहेज आदि कुरीतियों में धन का व्यय होता है। ओसर मोसर इत्यादि में भी कोई किसी किस्म की कसर नहीं छोड़ी जाती है क्या यह न्याय संगत है। इस अपव्यय से सर्वथा देश व समाज दोनों को हानि ही पहुँचती है। अपने स्वार्थ, नाम ऊँचा हो इसके लिए तो करते हैं मगर कोई अपने पूरे समाज के लिए या किसी व्यक्ति विशेष के लिए करने को अग्रसर नहीं होता है। अगर किसी में कुछ दोष भी होगा तो वह शीघ्र सुधारा जा सकता है। मनुस्मृति में लिखा है – "धृतिः क्षमा दयोऽस्तेयम्" यानी दया करना ही सबसे बड़ा धर्म है। अस्तु मानव जीवन की सफलता के लिए जहाँ विचार आचार में परिणित होना चाहिए वहाँ आचार भी विचारानुगत होना आवश्यक है। बुद्धिमान पुरूष सदा इसी का सेवन करते हैं। विचारी को ज्ञान और आचार को कर्म ही हम कह सकते हैं। ज्ञान औरकर्म का साथ अनादि काल से चला आ रहा है। वस्तुतः ज्ञान हमारा उद्देश्य है और कर्म उसका साधन है। विकास का सिद्धान्त भी इसी नियम पर अवलम्बित है। धर्म का पालन सबके लिए कारक है। अब विशेष न बढ़ाते हुए हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि आप और हम साधु–सन्त और गृहस्थ के भेदों को छोड़कर एक साथ हो समाज–देश दशानुसार सत्कार्य में प्रवृत्त हो जाएं। विशेषतः साधु समाज से प्रार्थना है कि जो त्रुटियाँ अपने समाज में हो उनको शीघ्रातिशीघ्र सुधार कर भारत की सभ्यता की वृद्धि के अभिलाषी बनें।

### श्री राममन्त्र राज परम्परा तथा कुछ शिष्य वंशावलि

यों तो वर्णन का जितना विस्तार किया जावे उतना कम ही होता है। मैंने अपनी बुद्धि अनुसार यह लेखनी लिखी है। वैसे तो

Scanned with CamScanner

सृष्टि के उत्पत्ति की कामना निरंजन निराकार ने तीन महाशक्तियों के माध्यम से की। तीनों को एक एक कार्य ही सौंपा गया। दूसरे में श्री विष्णु की उत्पत्ति और उनको सबकी पालना की कार्य सौंपा। तीसरे में शिवजी (महादेव) की उत्पत्ति की और उनको संहार का कार्य सौंपा। सर्वप्रथम श्री ब्रह्मा जी की उत्पत्ति की और उनको सृष्टि को रचने का कार्य सौंपा। फिर तीनों की सहायता के लिए अदृश्य रूप माया (स्त्री रूपी) को भेजा। गौर से देखने पर ज्ञात होगा कि एक छोटे से घर के कार्य को पूरा करने के लिए भी कितने जनों की जरूरत पड़ती है तो सृष्टि के कार्य को करने के लिए कितनों की जरूरत पड़ती है अतः आकशलोक, मृत्युलोक, पाताललोक इन तीनों के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए कई देवी–देवताओं की समय–समय पर उत्पत्ति की थी। अस्तु (इस मृत्यु लोक की स्थिति का वर्णन)

पिता सर्वेश्वर श्री रामचन्द्र जी, माता जगद्जननी श्री जानकी जी, रक्षक महावीर श्री हनुमान जी।

जिस प्रकार श्री महादेव जी ने अमरकथा श्री पार्वती जी को सुनाई थी उसी प्रकार से श्री रामचन्द्र जी ने रामगन्त्र जो छै अक्षरों का है वह श्री जानकी जी को कहा। "रां रामाय नमः" यह मंत्र श्री रामचन्द्र जी सीधे श्री हनुमान जी को बता सकते थे मगर श्री जानकी जी इससे वंचित रह जाती। यह सोचकर ही श्रीरामचन्द्र जी ने सीता जी को सुनाया। श्री सीता मैया ने श्री हनुमान जी को अपना लाडला पुत्र समझकर बताया। श्री हनुमान जी ने संसार के उद्धार हेतु राम उपासक श्री महादेव जी को फिर क्रमानुसार आगे से आगे उन्होंने श्री ब्रह्मा जी को, ब्रह्मा जी ने वशिष्ठ मुनि को, पराशर मुनि को, वेदव्यास जी को, शुकदेव जी को, पुरूषोत्तमाचार्य जी को, रामेश्वराचार्य जी को, द्वारानन्द जी को, देवानन्द जी को, श्यामानन्द जी को, सुतानन्द जी को, चिदानन्द जी को, पूर्णानन्द जी को, त्रियानन्द जी को हर्यानन्द जी को, राघवानन्द जी को, रामानन्द जी को दिया था।

श्री रामानन्द जी महाराज के वैसे तो कई शिष्य थे मगर

Scanned with CamScanner

उनमें उनके 12 शिष्य मुख्य थे। जिस समय श्री रामानन्द जी महाराज अपने प्रभाव को वितरित यानी उपदेशामृत देते थे उस समय भारतवर्ष में मुस्लिम सम्प्रदाय का राज्य था। उनका उस समय हिन्दुओं पर बहुत बुरा प्रभाव था अतः श्री रामानन्द जी महाराज ने इन्हीं बारह शिष्यों को अलग–अलग कार्य सौंपकर पूरे भारतवर्ष में अपने उपदेशों के प्रभाव से अलग–अलग शिष्यों की मण्डलियां बनाने की आज्ञा दी ताकि आर्य धर्म को क्षीण होने से बचाया जा सके। कुछेक ने अपने स्थान मुकर्रर कर कार्य आरम्भ किया व कुछेक ने भ्रमण करके शिष्य मण्डलियां बनाईं।

श्री रामानन्द जी महाराज के जो बारह मुख्य शिष्य थो उनके नाम व उनको जो कार्य सौंपा गया था वह क्रमानुसार इस प्रकार है –

श्री सुखानन्द जी – सिद्ध परमप्रेमी, श्री अनन्तानन्द जी, योगसिद्धी, श्री नरहर्यानन्द जी – राममन्त्र जाप, श्री सुरसुरानन्द जी – सन्त प्रसाद, सुरसुरानन्द जी की पत्नी श्री पद्मावती जी – गुरू भक्ति मन्त्रार्थ, श्री गालवानन्द जी – रामचरित्र वर्णन, श्री रमादास जी (रैदास जी) – संत सेवा, श्री कबीरदास जी – भजन प्रेम श्री भावानन्द जी – राम सेवा, श्री धन्ना जी – सेवा–भक्ति–सदाचार, श्री पीपा जी – रामभक्ति श्री सैन जी – रामकथा।

आप सबों ने अपने समजग जानि के उपदेश देकर अपने–अपने शिष्य बनाये थे तथा शिष्यों को अपने उपदेशों को जन–जाति के कल्याणार्थ देने को कहा था।

वैष्णर्व धर्म के 52 द्वारे हैं। उनमें 9 द्वारा निम्बार्क सम्प्रदाय के हैं। 3 द्वारा श्री माध्वाचार्य गौड़ सम्प्रदाय के हैं। 37 द्वारा श्री रामानन्द सम्प्रदाय के हैं। वैष्णव धर्मी जो साधु हैं उनको तो पूर्ण 52 द्वारों की जानकारी होनी ही चाहिए। मगर इस पुस्तक के बड़ी हो जाने व जिसलिए यह लिखी जा रही है वह अधूरी न रह जाय यह सोचकर कुछ मुख्य–मुख्य ही बातें यहाँ लिखना मुनासिब समझा गया है।

Scanned with CamScanner

द्वारा गादी के नाम तथा किसने कहाँ कायम की कुछ जानकारी ज्ञातव्य के अन्तर्गत लिखी गई है। त्रुटि के लिए क्षमा करें।

श्री रामानन्द जी के प्रथम शिष्य श्री सुखानन्द जी ने अपनी पाट द्वारा गादी निम्बी जोधाँ में कायम की नागौर परगना में अभी भी कायम है।

श्री रामानन्द जी के द्वितीय शिष्य अनन्तानन्द जी थे। इनके दो शिष्य श्री गणेश जी व जंगी जी। इनमें से श्री गणेश जी के शिष्य श्री तजतुलसीदास जी के शिष्य श्री देवमुरारी जी। इन्होंने देश में घूम–घूमकर 360 शिष्य बनाये थे और अपनी पाट द्वारा गादी प्रयागराज दारागंज में कायम की थी।

श्री अनन्तानन्द जी के द्वितीय शिष्य श्री जंगी जी के शिष्य श्री करमचन्द जी के दो शिष्य हुए। एक श्री अल्ह जी व दूसरे श्री देवाकर जी इन्होंने अपनी पाट द्वारा गादी जायल परगना नागौर में स्थापित की थी जो आज तक कायम है। लेखक के दादा गुरु, गुरु खुद भी इन्हीं देवाकर जी की गादी के अनुयायी रहे थे तथा जोधपुर का स्थान कायम है तब तक रहेंगे।

श्री अल्ह जी की पाट द्वारा गादी जहाजपुर में है। इनके शिष्य पयहारी श्री कृष्णदास जी थे इन्होंने गलता की गादी कायम की और जयपुर के राजा श्री पृथ्वीराज जी को अपना शिष्य बनाया था। उस समय राजधानी जयपुर की आमेर थी।

श्री अनन्तानन्द जी के प्रथम शिष्य श्री गणेश थे इन्होंने अपनी पाट द्वारा गादी पालड़ी (काँदारी) में कायम की।

श्री राम रावल जी ने अपनी पाट द्वारा गादी खौड़ परगना पाली बाली के पास में है कायम की।

श्री सुरसुरानन्द जी जो कि श्री रामानन्द जी महाराज के चौथे शिष्य थे इनकी पाट द्वारा गादी जयपुर (आमेर) में है। इन्हीं के शिष्य श्री कुँवाजी थे इन्होंने अपनी पाट द्वारा गादी झीगड़ा परगना पाली में है कायम की।

मौजूदा समय में "श्री धन्ना वंशी स्वामी समाज" जो राजस्थान राज्य सरकार से अल्प संख्यक संज्ञा में रजिस्ट्रीकरण संख्या 169

Scanned with CamScanner

सन् 1976 दिनांक 17 जुलाई को हुआ कहलाता है। यह बहुत काफी समय से मंडलों में विभक्त था। यह पहले पौराणिक खारिया जो सालासर के पास है, गोपालपुरा जो सुजानगढ़ के पास स्थित है, जिम्बी जो लाडनूँ के पास है, जायज जो कि नागौर–डीडवाना के बीच में विद्यमान है प्रचलित था। मौजूदा समय में 11 मंडल क्रमानुसार नाम से विख्यात है। भदोरा, बिझा, जायल, नरणाँऊ, कसूँम्बी, निम्बी, गोपालपुरा, खरिया, थावरिया, गोरबदेसर, नोहर। जैसे जैसे समय बीत रहा है, मन्द बुद्धि कहो या तीव्र बुद्धि आपसी विचारधारा से इनमें श्री कारणवश टुकड़े होते जा रहे हैं। समयानुसार यह जाति बढ़ती गई और अपने निर्बाह हेतु अलग–अलग गाँवों–शहरों में बसती गई। मण्डलों के महलों को कार्यसर इनके यहाँ जाना पड़ता था और गृहस्थी लोग भी जो मंडलों के नेंग महन्त हुआ करते थे उनको अपने घर पर कार्यवश बुलाया करते थे। उत्साह था, उमंग थी, प्रेम था तथा पूर्ण श्रद्धा से मान्यता थी। जब महन्त किसी गृहस्थी के घर पर जाते तो उसे पूरे गाँव में बहुत बड़ा सा माहोल बजवाता था। अब इस समय न तो नेंग महन्त ही हैं और अगर जो कोई है भी तो उनको गृहस्थी लोग अपने यहाँ बुलाते नहीं है। अतः यह पौराणिक रूढ़ि क्षीणभंगुर सी होती जा रही है।

उपरोक्त जो द्वारा गादी गई है वह इतनी ही मुझे मिल पाई है। वैसे यह शरीर आगे अभी खोज कर रहा है। पूर्णतया ज्ञात होने पर फिर आपके सामने प्रगट करने का साहस करूंगा।

## महात्माओं के जन्म संवत् व स्थान की जानकारी

(1) श्री राघवानन्द जी का जन्म कील वर्षे 4300, विक्रम संवत 1256, ईस्वी सन् 1199, शाके संवत 1121 में अयोध्या में ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनको श्री विष्णु का अंश मानते हैं।

(2) श्री रामानन्द जी महाराज का जन्म क. व. 4400, वि. सं. 1356 ई. स. 1299, शा. सं. 1221 के माह बदी 7 गुरूवार साल दण्ड दिन चढ़े कुम्भ लग्न में पिता पुण्यसदन शर्मा यह धार्मिक विद्वान पंडित थे, माता सुशीला देवी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण के घर उत्तर प्रयागराज में हुआ था। मगर इनका प्रभाव दक्षिण में ज्यादा माना

Scanned with CamScanner

गया। यह श्री रामचन्द्रजी के अंश माने जाते हैं। इनका स्वर्गवास क. सं. 4611, वि. सं. 1567, ई. स. 1410, शा. सं. 1432 में हुआ बताते हैं। इन्होंने काशी में श्री राघवानन्द जी से शिक्षा दीक्षा ली थी।

(3) श्री सुखानन्द जी का जन्म क. व. 4399, वि. सं. 1355 ई. स. 1298, शा. सं. 1220 वैसाख सुदी 9 शुक्रवार को ब्राह्मण के घर हुआ था। इनको शिव का अंश मानते हैं।

(4) श्री अनन्तानन्द जी का जन्म क. व. 4439, वि. सं. 1395 ई. स. 1338, शा. सं. 1260 के कार्तिक सुदी 15 शनिवार को ब्राह्मण के घर हुआ था। इनको ब्रह्मा का अंश मानते हैं।

(5) श्री नरहरियानन्द जी का जन्म क. व. 4456, वि. सं. 1412 ई. स. 1355, शा. सं. 1277 के वैसाख बदी 3 शुक्रवार को ब्राह्मण के घर हुआ था। इनको सनत्कुमार का अंश मानते हैं।

(6) श्री सुरसुरानन्द जी का जन्म क. व. 4466, वि. सं. 1422 ई. स. 1365, शा. सं. 1287 के वैसाख सुदी 9 गुरूवार को ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनको नारद का अवतार मानते हैं।

(7) श्री सुरसुरानन्द जी की पत्नी पद्मावती जी के जन्म के बारे में पूर्ण जानकारी मालूम न हो सकी। इनको श्री लक्ष्मी जी का अवतार मानते हैं।

(8) श्री गालवानन्द जी के जन्म के बारे में भी जानकारी नहीं मिल पाई मगर इनकों श्री शुकदेव जी का अंश मानते हैं।

(9) श्री रमादास जी (रैदास) का जन्म क. व. 4499, वि. सं. 1455 ई. स. 1398, शा. सं. 1320 के चैत सुदी 2 शुक्रवार को चित्रा नक्षत्र में हुआ था। यह चमार जाति के थे। इनको यमराज का अवतार मानते हैं।

(10) श्री कबीरदास जी का जन्म क. व. 4500, वि. सं. 1456 ई. स. 1399, शा. सं. 1321 के जेठ सुदी 15 मंगलवार को होना पाया गया। वैसे तो यह ब्राह्मण कुल के थे। ऐसी किंवदन्ती है कि इनके माता की शादी नहीं हुई थी और इनका जन्म हुआ तब इनको छोटी अवस्था में ही त्यागना पड़ा था। पूर्ण विवरण ज्ञात न होने से व

Scanned with CamScanner

इनके ज्ञान से हिन्दू व मुसलमान दोनों ही समान रूप से मानते थे। इन्होंने सभी धर्मों को समान रूप से माना था। सभी धर्मों के भजन बनाकर प्रस्तुत किये थे। इनको श्री प्रह्लाद राजा का अवतार मानते हैं।

(11) श्री भावानन्द जी का जन्म क. व. 4506, वि. सं. 1462 ई. स. 1405, शा. सं. 1327 के वैसाख बदी 6 सोमवार को हुआ था। यह जाट जाति के थे। इनको राजा श्री जनक जी का अवतार मानते हैं।

(12) श्री धन्ना जी का जन्म क. व. 4516, वि. सं. 1472 ई. स. 1415, शा. सं. 1337 के माह बदी 8 शनिवार वृश्चिक लग्न, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जाट जाति में हुआ था। इन्हें बलिराजा का अवतार मानते हैं।

(13) श्री पीपा जी का जन्म क. व. 4526, वि. सं. 1482 ई. स. 1425, शा. सं. 1347 के चैत सुदी 15 बुधवार को धन लग्न में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ कुम्हार जाति में हुआ था। यह मनुजी का अवतार मानते हैं।

(14) श्री सैन जी का जन्म क. व. 4546, वि. सं. 1502 ई. स. 1445, शा. सं. 1367 के माह बदी 12 शनिवार को हुआ था। यह नाई जाति के थे। इनको भीष्म का अवतार मानते हैं।

(15) श्री मीराबाई ने रामानन्द जी के नाम को गुरू माना था। इनको राधा का अवतार मानते हैं।

वैसे लोगों की धारणा में मुख्य चतुः सम्प्रदाय कहते हैं मगर बहुत कुछ वर्षों से 6 सम्प्रदाय चली आ रही है। किसके माहात्म्य से कौन सी सम्प्रदा बनी इसकी जानकारी भी लिख दी जाती है और उनके मुखियाओं के नाम व जन्म समय भी लिखा जा रहा है।

रामानन्द सम्प्रदा श्री रामानन्द जी से। रामानुज (निरंजनी) सम्प्रदा कहीं कहीं पर इसे विष्णु सम्प्रदा भी कहते हैं। यह श्री रामानुज जी से शुरू हुई। निम्बार्क सम्प्रदा श्री निम्बार्क जी से। गौड़ सम्प्रदा श्री माध्वाचार्य जी से चली। वल्लभ सम्प्रदा श्री वल्लभाचार्य जी से शुरू हुई। श्री सम्प्रदा श्री चैतन्य महाप्रभु से आरम्भ हुई ऐसा मानते हैं।

Scanned with CamScanner

(1) श्री रामानन्द जी का जन्म पहले लिख दिया है।

(2) श्री रामनुज जी का जन्म क. व. 4118, वि. सं. 1074 ई. स. 1027, शा. सं. 939 में पिंगल नाम संवत्सर, मेख संक्रान्ति, आद्रा नक्षत्र, वैसाख सुदी 6 गुरूवार को मद्रास से 26 मील दूर पश्चिम परमबट्टर (श्री भूतपुरी) में वारित गोत्री श्री केशवनाथ यांज्ञिक ब्राह्मण के घर पर कापीमति माता के गर्भ से होना पाया गया। इनको दशरथ का अवतार मानते हैं।

(3) श्री निम्बार्क जी का जन्म क. व. 4152, वि. सं. 1208 ई. स. 1151, शा. सं. 1073 के काती सुदी 15 को ब्राह्मण कुल में होना माना गया। इनको तेलंगुदेश में पैदा होना व वृंदावन में जा बसना मानते हैं। यह सूर्य के अवतार माने गए हैं। कहते हैं कि एक दिन इन्होंने अपने तपोबल से सूर्य की गति रोक ही दी थी क्योंकि इन्होंने शाम होने पूर्व भोजन कर लेने की प्रथा चला रक्खी थी।

(4) श्री माध्वाचार्य जी, कई लोग इनको (आनन्तीर्थ) नाम से भी पुकारते थे। इनका जन्म क. व. 4358, वि. सं. 1314 ई. स. 1257, शा. सं. 1179 में मंगलौर से 60 मील उत्तर में उदोपी नगर में ब्राह्मण के घर हुआ था। इनको वशिष्ठ का अवतार मानते हैं।

(5) श्री बल्लभाचार्य जी का जन्म क. व. 4580, वि. सं. 1539 ई. स. 1479, शा. सं. 1401 के वैसाख बदी 11 को ब्राह्मण कुल तेलंगुदेश में होना माना गया । इन्होंने विष्णु स्वामी के मतों को अंगीकार कर वल्लभ सम्प्रदा की स्थापना की।

(6) श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्म क. व. 4506, वि. सं. 1542 ई. स. 1485, शा. सं. 1407 के फाल्गुन सुदी 15 को वणिक घर में बंगाल के नादिया ग्राम में होना पाया गया । यह माध्वाचार्य जी व रूद्र सनकादि ऋषियों के शिष्य बने थे, दो को गुरू बना लेने से अपनी अलग ही सम्प्रदा चलाई और वि. सं. 1590 में ही श्री जगन्नाथ जी में लीन हो गये थे।

(7) हिन्दू धर्म को पतन से बचाने के लिए आखिरी संत श्री रामचरण जी रामसनेही मत के संस्थापक का जन्म क. व. 4762, वि. सं. 1718 ई. स. 1661, शा. सं. 1583 के माह सुदी 14 को शूरसेन

Scanned with CamScanner

शाहपुर (जयपुर) में हुआ था। यह कुम्हार के घर जन्मे थे। इनके पिता का नाम लालचरण जी था। इनको भी बाल्यावस्था में ही संतों के समागम से ज्ञान प्राप्त हो गया था। अतः यह भक्ति लीन हो गये। इन्होंने किसी भी गुरू से दीक्षा नहीं ली थी और अपने प्रभाव से ही शिष्य बनाकर रामसनेही मत की स्थापना की।

इससे साफ जाहिर होता है श्री रामानन्द जी के शिष्य कबीर जी, रमादास जी, सैन जी, पीपा जी, धन्ना जी थे। इन्होंने अपने–अपने उपदेश देकर अपनी– अपनी अलग–अलग मण्डलियें शिष्य बनाकर तैयार की थी। जैसे कबीरदास जी के कबीरपंथी, पीपाजी पीपावंशी, दादुदास जी दादुपंथी, रामचरण जी के रामसनेही कहलाये। ठीक इसी प्रकार से ही शायद श्री धन्नाजी के शिष्य धन्नावंशी कहलाये हों। ऐसी मेरी धारणा है यह आप से मनवाना नहीं है। स्पष्टतया संकेत से साफ जाहिर होता है कि यह जाट थे और इन्हीं धन्नावंशियों के गोत्र सभी जाटों से मेल खाते हैं। ऐसा भी तो हो सकता है कि इन्होंने जाटों को ही अपने शिष्य बनाये हों। साधु, सन्त, स्वामी सभी कहलाते हैं। देश के अलग–अलग राज्यों (प्रांतों) में होने से उनकी जिस तरह भाषा अलग–अलग ही होती है। भेष और बोली (भाषा) भले ही अलग हो मगर कर्त्तव्य व कर्म एक ही होता है। उपरोक्त विवरण जो है वह मुझे जैसा ज्ञात हुआ उसी को अपनी बुद्धि अनुसार आपके सामने प्रगट करने का दुःसाहस हुआ है। त्रुटि के लिए क्षमा चाहता हूँ।

वैष्णव मत ईसा के पाँच सौ वर्ष पूर्व ही उत्थापन हुआ था। पहले यह मत भागवत धर्म कहलाता था। ईसा के कुछ वर्ष बाद अमीरों ने इसको श्रीकृष्ण भावना बनाया। 8वीं शताब्दी में यह धर्म शंकर के सम्पर्क में रहा। 11वीं शताब्दी में यह श्री रामनुजाचार्य जी के सम्पर्क में रहा। 12वीं शताब्दी में यह धर्म भी निम्बार्क जी से सम्बन्ध में रहा। 13वीं शताब्दी में यह धर्म श्री माध्वाचार्य जी के अनुसरण करने लग गया था। 14वीं शताब्दी में यह धर्म श्री रामानन्दजी के सम्पर्क में सिद्ध हो गया। 15वीं शताब्दी में यह धर्म श्री चैतन्य महाप्रभु के अनुसरण करने लगा। 16वीं शताब्दी में वह श्री बल्लभाचार्य

Scanned with CamScanner

जी के मतों को मानने लगा। 17वीं व 18वीं शताब्दी में यह अलग–अलग विभाजन में लगा रहा। 19वीं शताब्दी में यह मत पूर्ण विभाजन होकर अलग–अलग मतों में विभाजन हो गया। 20वीं शताब्दी में यह अलग–अलग मत भी क्षीण होने पर उतारू हो रहा है। ज्यों–ज्यों समय बीता जा रहा है त्यो–त्यों यह सब मत यानी वैष्णव धर्म जीर्णावस्था की तरफ बढ़ रहा है और 21वीं शताब्दी में यह नाम मात्र के रूप में रह जावेगा। इसका कारण स्पष्ट है कि 16वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक कोई भी महापुरूष ऐसा नहीं हुआ जो इन धर्मों को बनाया रख सके। नया धर्म उत्पन्न करना दूर की बात है इनकों क्षीण होने से भी न बचा सके। हाँ ऐसे–ऐसे पंडित, ज्ञानी–ध्यानी, महात्मा समय–समय पर उदय होते जरूर हैं जो मनुष्यों को भगवद्भक्ति का उपदेश देते रहते हैं। मगर उनको धर्म में दृढ़ रहने का संकल्प नहीं करवा सकते हैं। अतः नई दिशा उत्पन्न करने का तो सवाल ही नहीं उठता।

हालाँकि इस पुस्तक में उपरोक्त तमाम विवरण की कोई जरूरत नहीं थी फिर भी कुछ सूक्ष्मतया जानकारी इसलिए दी गई है कि इस धरती पर कलियुग के आ जाने पर धर्म (हिन्दु आर्य्य, सन्तों के वचनों का पालन) कहिये, ईश्वरभक्ति को क्षीण होते हुए को बचाने के लिए वक्त–वक्त पर अनेक संत–महात्माओं ने प्रगट होकर अपनी – अपनी मती अनुसार ईश्वर भक्ति व आर्य्य धर्म को बचाने की चेष्टा की और अपनी सामर्थ्यानुसार आगे बढ़ाया। वैसे तो भगवान की भक्ति सभी जातियों के सभी मनुष्य कर सकते हैं चाहे वह स्त्री हो या पुरूष, बालक हो या वृद्ध। जिसकी चित्त वृत्ति रूपी सरिता का प्रवाह भगवद्रूपी परमानन्द महासागर की ओर बहने लगे वही भक्ति का अधिकारी है और उसी पर भक्त भावन भगवान प्रसन्न होते हैं। जब प्रसन्न होते हैं तब क्या होता है जिसका उदाहरण नीचे लिखते हैं।

श्री भक्तराज धन्ना जी के बारे में ज्ञान चर्चा कहिये या उनकी जानकारी कहिये। सर्वप्रथम श्री अनन्तानन्द जी ने धन्ना जी का चरित्र वर्णन किया था जिनके बनाये पद आगे लिखेंगे फिर उनके

Scanned with CamScanner

बाद में श्री अनन्तानन्द जी के शिष्य श्री अंगी जी के शिष्य श्री अग्रजी के विषय श्री नाभा जी ने अपनी पुस्तक "वि. सं. 1640 प 80 के बीच में लिखी थी। वैसे श्री धन्ना जी को ज्यादा मान्यता सिक्खों ने दी। अपने 'गुरूग्रन्थ साहब' पुस्तक (सिक्खों के पाँचवे गुरू श्री अर्जुन देव जी ने बनाकर तैयार की थी) उसमें इनका काफी वर्णन है और आज भी वह अपने समाज के हर उत्सव कार्यों में प्रथम उनके पद गाकर शुरूवाद करते हैं।

## अनन्तानन्द जी के पदों का विवरण

।।कवित्त।। घर आवे हरिदास तिन्हें गोधूम रखवायो, तात मात उर थोथ खेत लांगूल बनायो। आस पास कृषिकार खेत की करत बड़ाई, भक्त भजे कीरति प्रगट परनीति जो पाई।।1।। आचरज मानत जगत में, कहूँ निपज्यों कहूँ बोलयो। ध न्य धन्ना के भजन को, बिनही बीज अंकुर भयो।।2।। खेत की बात कहि प्रगट कहि प्रगट कवित्त माँस, सुनो एक और भई प्रथम सूं रीति है। आयो साधु विप्रधाम, अभिराम करै ढस्यो ढिंग, आप कहि मोहूँ दिजे प्रीति है।।3।। पाथर ले दियो, अति सावधान कियो, यह छाती लाय जियो, सेवे जैसी नेह नीति है। रोटीधरि आगे आँखे मूंदि लियो परदाके, छुयो नहिं टूक देखि भई बड़ी भीत है।।4।। बार–बार पाँय परे अरू भूख प्यास तजि, धरे हिये साँचो भाव पाई प्रभु धारियें। छाक नित आये नींके भोग को लगावे जोई, छोड़े सोई पावे प्रीति रीति कछु न्यारिये।।5।। जाको कछु खाय, ताकी टहल बनाय करे, ल्यावत चराय गाय हरि उर धारिये। आये फिरि विप्र नेह खोजेहूँ न पायो कहूँ सरसायो, बातें ले दिखायो श्याम ज्यरिये।।6।। द्विज लखि गायनि में चाय नित मात नहिं भाय, निकी चोट दृग लगि नीर झरि है। जाय के भवन सीता ....बज प्रसन्न करे, भाग मानि प्रीति देखी जैसी करी है।।7।। धन्ना को दयाल ह्वेके आग्या दई ढरो, करो गुर–रामानन्द भक्तिमति हरि है।

Scanned with CamScanner

भये शिष्य जाय आय छाति सूं लगाय लिये, किये ग्रह काम सबै, सुनि जैसी धरी है।।8।।

।।दोहा।। धन्ना जाट को फिरि कहों, यह चरित्र रचि ठाट।
जाहि सुनत हरि भक्त की, देखि परे दृग बाट।।1।।

।।चौपाई।। दिसि वरूण देसहिं में रह्यो, कोऊ जाट जाति सुबुद्ध है। ताके भयो यक सुबज, ताको धन्ना नाम प्रसिद्ध है।।1।। इक जाय पंडित तासु घर, किय वास, नहि सत्कार है। उठि करे शालिग्राम पूजन, रोज बिबिध प्रकार है।।2।। तेहि निकट सिधारि, पूजन हेतु गांग्यो ठाकुरे सो जाय मंजन हेतु सरिता, गुण्यो मंजन करि उरे।।3।। ले गोल यक पाषाण, मेटहूँ बाल हट दे ताहि के। अस ठांनि मन पाषाण ले, यक धारिये प्रभु संग चाहिके।।4।। जब धन्ना मांग्यो जाय तब, कहि दियो ठाकुर नाम है। यहि पुजियो तुम रोज, तुम्हरों पुरिहे यह सब काम है।।5।। अस भाषि पंडत गमन किय, तब तें धन्ना पाषाण को। पूजन करे भरि प्रेम रोजहिं, करत अति सनमान को।।6।। हरि होत प्रेमहिं नें प्रगट, यह सकल श्रुति सिद्धान्त है। नैवेद्य धरि बोले धन्ना, अब खाऊँ कमलकान्त है।।7।। अस खात नहिं बतरात नहिं, उभै किधौ पंडित बिना। अस कहत विषाद भरि, रोवन लाग्यो व्याकुल धन्ना।।8।। तहँ जानि सुद्धव स्वभाव शिशु, प्रगटे पाषाण ही ते हरि। बतरात तेहि नैवैद्य खायो, धन्ना संगति करी।।9।। रोटी लगावे भोग नित, खावे भुवन पति आयके। यक रोज हरि कहे, सुकी रोटी धँसति कँठन जायके।।10।। तब छाछ पर घर मांगि, रोजहिं रोज भोग लगावहिं। धन्ना अपने धेनु बछरा, रोज चरावहिं।।1।। हरि कह्यो रोजहिं खात तुमरो, देहूँ मोहि कुछ काम है। तब धन्ना कह मम धेनु फेरहूँ, जाहुँ ममले धाम है।।12।। तब तें नितहिं प्रभु धन्ना, धेनु चराय फेरहुँ भवन को। बहुकाल बीत्यो भाँति यहि, पंडित सो किम आगमन को।।13।। पुछ्यो धन्ना नें

Scanned with CamScanner

विप्र सों पुजन करों के धोनहिं। तब आदि तें वृतान्त सगरों, धन्ना बरन किये सही।।14।। पंडित सुन तजकि रह्यो, कहो विसेसि मोठि देखाइये। तब धन्ना ले तेहि विपिन चारत, धेनु ताहि बताइये।।15।। पंडित हि पेखिन परे प्रभु, बैठ्यो गलानिहि मानिकै। तब धन्ना कयो चपेटिन दीन्यो, दरस तब बन आनिके।।16।।

।।दोहा।। धन्ने पाषाण हिं ते मिले, मिले न द्विजहि पुजाय। प्रेम अधीन विज्ञणिकै, जानहूँ यादव राय।।2।। (मनुस्मृति से) न देवो विद्यते काष्ठे, न पाषाणे न मृण्मये। सर्वत्र विद्यते देव, स्तत्र भावोहि कारणम्।। भावार्थः प्रभु न लकड़ी में, न पत्थर में और न मिट्टी में होते हैं। जिसका जैसा भाव होता है वहाँ सब जगह प्रभु विद्यमान होते हैं।

।।दोहा।। धन्ने दिन दियो हरि, होऊँ शिष्य तुम जाय।
काको रामानन्द है, धारहूँ ग्यान निकाय।।3।।

।।चौपाई।। यक समय गेहूँ नमनहिं तेंगे, धन्ना विपित बगार में। तहँ संत आये दूरितें, तिन लियो अति सत्कार में।।1।। कह संत भुखे सकल हम सुनि, धन्ना गेहूँ न बेचिके। तेहि ठाँम व्यंजन विरचि, संत खबराय दिये सुख सेंचिके।।2।। पितु मातु भे भरि भुरि धुरिहि, पूरि दिय सब खेत में। गोधूम जाम्यो सरस सबतें, बढ्यो संतन हेत में।।3।। सब कृषिक निरखि सिहात आपु, समाहि सकल सिरारहीं। जस धन्ना को गोधूम जाम्यो, लख्यो हम कसहूँ नहीं।।4।। धनि धनि संत प्रभाव जग, यह कछु अचरज नाहिं। संत बदन बोयो धन्ना, जाम्यो खेतन माँहि।।4।।

(नाभाजी कृत भक्तमाल से लिये गद्य व बनाये पद्य)

**यह बात आज से ठीक 570 वर्ष पहले की है।**

भक्त धन्ना जी जाट थे। कुल तो उच्च था मगर समयानुकूल विद्याध्ययन करने का साधन नहीं मिल सकता था। अतः इन्होंने विद्याध्ययन नहीं किया। विद्याध्ययन प्राप्त हुए बगैर शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करना दुर्लभ होता है। परन्तु उनका हृदय सरल व अनुराग से

Scanned with CamScanner

भरा था। संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसके हृदय में प्रेम का बीज न हो। वैसे प्रेम भी कई प्रकार के होते हैं। उनमें से एक भगवद्प्रेम भी होता है। अभाव है उस पर संत समागम रूपी सुधाधार के सिंचन का। संत सुधा से सदा सिंचन होता रहे, भगवन्नाम रूपी अनुकूल वायु हो, दृढ़ श्रद्धा, विश्वासरूपी छाया से सुरक्षित हो तो वह एक दिन विशालकाय अमरवृक्ष बनकर अखिल विश्व को अपनी सुगन्ध से और मधुर अभिमय फलों से सुखी एवं परितृप्त कर सकता है।

मगर धन्ना जी का प्रेम बीज बहुत छोटी अवस्था में ही संत सुधा समागम से जीवनी शक्ति प्राप्त कर चुका था। धन्ना जी के पिता खेती का काम किया करते थे। पढ़े लिखे न होने पर भी उनका हृदय सरल और श्रद्धा से सम्पन्न था। वे सदा अपनी शक्ति अनुसार संतों भक्तों और महात्माओं की सेवा किया करते थे। उस समय न तो आज की भाँति अतिरिक्त बुद्धिवाद रोग का प्रचार था और न भंड तपस्वियों का ही भारत भूमि पर विशेष भार था। इससे साधु सेवा होने में कोई विशेष बाधा नहीं थी। धन्ना जी के पिताजी के यहाँ भी समय-समय पर अच्छे अच्छे साधु-संत-महात्मा आ जाया करते थे।

धन्ना जी का जन्म स्थान राजपूताना के टोंक रियासत के दक्षिण पश्चिम में 60 मील दूर खेरीपुर गाँव में हुआ था। अब आज यह राजस्थान के देवली छाँवनी से 25 किलोमीटर पूर्व उत्तर में धुँआ कला के नाम से विख्यात है। खेरीपुर से धुँआ नाम क्यों पड़ा इसका कारण नीचे कथा में आ जायेगा। इनके पिता नगराज घेतरवाल व माता गंगा गढ़वाल थी। इनके जन्म की तिथि पहले बता गयी है।

।।चौपाई।। गुरू-गोविन्द के आग्या पाऊँ, दास धन्ना की कथा सुनाऊँ। हरि किरपाते हरिगुण गाऊँ, यथाशक्ति हूँ वरणन सुनाऊँ।।1।। वरूण देश खेरीपुर वाशी, हरिदासन को बड़ो उपासी। विप्र एकज जमाना माँहि, सो खेरीपुर निसरयो आई।।2।। पिता धन्ना को गृहस्थ भारी, ब्राह्मण की किन्हीं मनुहारी। दिनां चार किनो विश्रामा, पायो

मोक्ष बहुत आरामा।।3।। सो द्विज हरि के गुण गावे, राम भगत सबके मन भावे। धन्नो चरावे घर की गायाँ, भगत अँकुर छिपे नहीं माया।।4।। धन्नो कहे सुनो द्विज देवा, मैं भी करूँ प्रभु की सेवा। विप्र कहे बालक तुम भाई, हरि सेवा में अति कठिनाई।।5।। बालक हठ बहुत ही कीनो, तब विप्रहिं इक शिला टूक दीनो। सेवा कीजो तन मन लाई, या पहला भोजन मत पाई।।6।। ये ही राम साँचे मन जावो, तन मन सें ती हरि पद पावो।

।।दोहा।। धन्ना को ठाकुर देयकर विप्र गयो निजगेह।
पूरण मनोरथ पायकर आछो लागे नेह।।1।।

(भावार्थ) गुरू और गोविन्द की आग्या पाकर के भक्त धन्नादास की कथा सुनाता हूँ। हरि की कृपा से यह हरि का गुणगान है, इसे जैसी मेरी बुद्धि की शक्ति है उसी अनुसार यह वर्णन करता हूँ। (पौराणिक) वरूण देश में एक खेरीपुर गाँव है, वहाँ पर एक हरि का दास निवास करता था। धन्नादास की उम्र उस समय पाँच साल की थी। एक समय एक भगवद्भक्त ब्राह्मण साधु भेषधारी उनके घर पर पधारे। धन्ना के पिता का गृहस्थ सर्व सम्पन्न था। उन्होंने उस ब्राह्मण की बहुत भावात्मक हरि का दास जानकर ठहरने की मनुहार की। ब्राह्मण चार दिनके लिए ठहरने को राजी हुआ देखकर अपने को मोक्ष मिल गया समझा और उनके ठहरने की अच्छी व्यवस्था की जिससे साधु का बड़ा आराम मिल गया। ब्राह्मण ने अपने हाथों से कुँए से जल निकालकर स्नान किया तदन्तर सन्ध्या वन्दना से नित्यक्रिया करने के बाद अपनी झोली में से भगवान शालिग्राम की मूर्ति निकाल कर उसे भी स्नान कराया। वस्त्र, चंदन, तुलसी, धूप दीपादि से उनकी पूजा कर उनको अपने हाथ से बनाया हुआ भोजन पड़दा कर भोग लगाया फिर स्वयं ने भोजन किया। धन्ना जी ने अपने घर की गौवें चराया करते थे। धन्ना जी उस भक्ति निष्ठ ब्राह्मण की सब क्रियाएं बड़े कौतुक व दृढ़ता से देखते रहते। बालक का हृदय कोमल होता ही है तथा इनका स्वभाव भी सरल ही था। इस तरह बालक धन्ना और ब्राहाण के समागम को चार दिन बीत गये।

Scanned with CamScanner

ब्राह्मण सुबह को सेवा–पूजा इत्यादि करता तथा रात को कथा–कीर्तन करता था अतः वह सबके मन को अच्छा लग रहा था। एक दिन ब्राह्मण देव वहाँ से जाने को तैयार हुए। ब्राह्मण को इस तरह भगवान की पूजा अर्चना को देखकर धन्ना के मन में भी इच्छा हुई कि यदि मेरे पास भी भगवान की मूर्ति हो तो मैं भी इसी तरह उसकी पूजा करूँ। वैसे बालक जैसी बात सुनता है और काम को देखता है वैसा ही वह करना भी चाहता है। धन्ना ने सरल हृदय की स्वाभाविक मन प्रसन्न करने वाली मीठी वाणी से उस ब्राह्मण के पास जाकर कहा। पंडित जी आपके पास जैसी भगवान की मूर्ति है वैसी एक मूर्ति मुझे दो तो मैं भी आपकी ही तरह से उनका पूजा करूँ। ब्राह्मण ने पहले तो कुछ ध्यान नहीं दिया सोचा कि यह बच्चा है इसे क्या मालूम कि पूजा–पाठ क्या होता है और भगवान क्या होते हैं। परन्तु बालक धन्ना ने जब बार–बार रोकर, गिड़ गिड़ाकर उसे बेचैन कर दिया। (यह सब होनी का प्रभाव है जैसे बालक ध्रुव ने नारद से, बालक प्रह्लाद ने अपने पिता हिरण्यकश्यप से हठ किया था।) तब ब्राह्मण ने अपना पीछा छुड़ाने की सोचकर धन्ना जी की नजर बचाकर एक काले पत्थर का टुकड़ा जमीन से उठाकर दे दिया और कहा कि यह तुम्हारे भगवान हैं। तुम इन्हीं की पूजा करना, इनको भोजन कराये बगैर खुद भोजन मत करना। इन्हीं प्रभु को सच्चे मन से ध्यावना तो तुम तन–मन से हरि के पद को पावोगे। धन्ना को मानों यही गुरू दीक्षा मिल गई। इसी अल्पकाल में सत्संग और सरल भक्ति के प्रताप से बालक धन्ना जी प्रभु को अत्यन्त शीघ्र प्रसन्न करने में समथु हुए। सत्संग का महात्म्य भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं भागवत में श्री उद्धव जी से कहा था। धन्ना जी को ब्राह्मण देवता ने ठाकुर देकर के अपने दूसरे गाँव चले गये। उधर धन्ना जी अपना मनोरथ सिद्ध हुआ जानकर बहुत खुश हुए।

।।चौपाई।। बालक वन में धेनु चरावे, आई रोटी भोग लगावे। नेत्र मूंदकर फिर परदो कियो, पारस सब आगे धर दिया।।1।।
बार बार धन्नो जी देखे, अब तक ठाकुर नहिं पेखे। अब धन्नो मन में पछतावे, ना जानें यो क्यों नहिं पेखे।।2।।
विप्र पास से मैं लियो छुड़ाई, याकूँ तो अब ओलूँ आई।

Scanned with CamScanner

पुनि पुनि धन्नो ध्यान लगावे, तब ही ठाकुर नहिं पावे।।3।। अति व्याकुल भयो मन माँहि, विप्रहिं जायकर लाऊँ बुलाई। फिर देखे तो यो मर जासी, मैं भी खाय मरूँगो फाँसी।।4।। नेन नीर बहे कंठ सुखाये, अब तो हरिजी आप ही आयो। हरसित भयो धन्ना मन भायो, आधो पारस प्रीत सूं पायो।।5।। ठाकुर हाथ धन्नो गह लीनो, बच्यो भात धन्ना को दीनो। महाप्रसाद शीस धरि लीयो, बहुरि भोजन धन्ने कियो।।6।।

।।दोहा।। आदो पारस रेंणदो, आदो जावो पाय।
विरिया आयो आपरी, जावो धेनु चराय।।2।।

(भावार्थ) बालक धन्ना जी के आनन्द की सीमा नहीं है। वह अपने भगवान को कभी अपने मस्तक पर रखते हैं, तो कभी छाती से लगाकर चूमते हैं। धन्ना जी के पूजा का ठाट कुछ और ही था। ध न्ना जी ने तमाम खेलकूद छोड़ दिये थे। वह रात रहते ही उठते, स्नान करते तदनन्तर भगवान को स्नान कराकर चंदन की जगह नई मिट्टी का तिलक लगाते। तुलसी की जगह वृक्ष के हरे–हरे पत्ते चढ़ा देते। बड़े प्रेम से पूजा करके भक्ति भरे हृदय से साष्टांग दण्डवत करते। माता जब खाने को बाजरे की रोटी देती तब धन्ना जी उस रोटी को भगवान के आगे रखकर अपनी आँखें मूँद लेते, कपड़े से पड़दा करते। बीच–बीच में आँखे खोलकर देखते जाते कि भगवान ने अभी भोजन किया या नहीं। फिर थोड़ी देर के लिए आँखें बन्द कर लेते। इस तरह बैठे–बैठे जब बहुत देर हो जाती तब वह देखते कि भगवान ने अब तक रोटी नहीं खाई तो उन्हें बहुत दु:ख होता और वह बार–बार हाथ जोड़कर बालकोचित्त सरल स्वभाव और सरल वाणी से अनेक प्रकार से विनय करते। इस पर भी जब वह देखते कि भगवान किसी प्रकार भी भोग नहीं लगाते हैं। तब वह निराश होकर यह समझते कि भगवान मुझसे नाराज हैं। इसी से मेरी पूजा व भोग स्वीकार नहीं करते। भगवान भूखे रहे और मैं खाऊँ यह कैसे हो सकता है। यह विचार कर वह रोटी जंगल में जानवरों को दे आते और खुद भूखे रह जाते फिर दूसरी दिन उसी प्रकार

Scanned with CamScanner

पूजा करते और भोग लगाते। इस तरह करते–करते कई दिन बीत गये। धन्ना का बल एकदम घट गया, शरीर सूखने लगा। चलने फिरने की शक्ति जाती रही। शारीरिक क्लेश की उन्हें इतनी परवाह नहीं थी जितनी उन्हें इस बात का दुःख हुआ कि ठाकुर जी मेरी रोटी क्यों नहीं खाते। मैंने इन ठाकुर जी को उस ब्राह्मण से छीन लिया है और अब यह उनकी याद में दुःखी है। मैं इस ठाकुर जी को कैसे समझाऊँ (मनाऊँ) इसी मार्मिक दुःख के कारण उनकी आँखों से सर्वदा आँसुओं की धारा बहा करती थी।

इधर धन्ना की यह हालत थी उधर भगवान का सिंहासन डोलने लगा, सरल बालक की कठिन परीक्षा हो गई। भक्त के दुःख से द्रवित होकर भगवान प्रकट हुए। सच्चिदानन्दधन जो योग–समाधि और ज्ञान–निष्ठा से भी दुर्लभ हैं, वह परब्रह्म नारायण धन्ना जी के प्रेमाकर्षण से अपूर्व मनमोहिनी मूर्ति धारण कर भक्त धन्ना जी के सामने प्रगट हुए। उस प्रपनान्मन प्रेमी भक्त की भक्त्युपद्गतम रोटी बड़े प्रेम से भोग लगाने लगे। जब आधी रोटी खा चुके तब महाभाग धन्ना जी ने उनका हाथ पकड़ लिया और कहने लगे कि ठाकुर जी इतने दिनों तक तो आये नहीं। खुद भी भूखे रहे और मुझे भी भूखों मारा। आज आये तो अकेले ही सारी रोटी लगे उड़ाने। तुम्हीं सब खा जाओगे तब क्या मैं आज भी भूखों मरूँगा। क्या मुझको जरा सी भी नहीं दोगे। बालक भक्त के सरल सुहावने वचनों को सुनकर भगवान मुस्कराये और बची हुई रोटी उन्होंने धन्ना को दे दी। आज इस धन्ना जी की रोटी का अमृत से भी बढ़कर स्वाद का बखान शैष–शारदा भी नहीं कर सकते। भक्तवत्सल, करूणानिधि, कौतुकी भगवान प्रतिदिन इसी प्रकार प्रगट होकर अपने जन–मन–हरणरूप माधुरी से धन्ना का मन मोहने लगे। मनुष्य जब तक यह अनोखा रूप नहीं देखता तभी तक उसका मन उसके वश में रह सकता है। जिसने एक बार उस रूप छटा की झाँकी के दर्शन करने का सौभग्य प्राप्त हो गया उसका मन सदा के लिए हाथ से जाता रहा। फिर उसे एक क्षण भर के लिए उस सुन्दर छबि को छोड़कर संसार की कोई भी चीज नहीं सुहाती, धन्ना जी की भी यही दशा हो गयी। यदि वह

Scanned with CamScanner

एक क्षण भर के लिए उस मनमोहन को आँखों के सामने या हृदय मंदिर में न देख पाते तो उसी समय मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते। पल भर के लिए भी भगवान का वियोग उनके लिए असह्य हो उठता। इसी से भगवान को सदा सर्वदा धन्नाजी के साथ या उनके हृदय धाम में रहना पड़ता। धन्ना जी ने अपने प्रेम रजु से भगवान को बांध लिया। इसी कारण से वे भक्त के परमधन भगवान भी धन्ना जी को एक पल के लिए अलग नहीं छोड़ सकते थे। भगवान का तो यह प्रण ही जो ठहरा। गीता में खुद भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है :–

।।श्लोक।। यो मां पश्यन्ति सर्वत्र, सर्व चमयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि, स च मेव प्रणश्यन्ति।।

(भावार्थ) जो सब में मुझको देखता है और सबको मुझमें देखता है उससे मैं कभी अदृश्य नहीं होता और मुझसे वह कभी भी अदृश्य नहीं होता।

।।चौपाई।। कितयक दिन ऐसेई गया, राम धन्ना दौनुँ संग रेया। एक दिन ठाकुर यों बोले जग की रीत धन्ना सूँ खोले।।1।।
रोज ही रोज तुम्हरो खाऊँ, काम न करूँ ऐसे ही पाऊँ।
कछुयक सेवा मोकूँ दीजे, रीत सबन की मौपे लीजे।।2।।
धन्नो कहे धेनु यह फेरहूँ, विपिन चरा धाम मम घेरहूँ।
ठाकुर धन्ना धेनु चरावे, धन्नो ठाकुर सेवा लावे।।3।। एक समे विप्र फिरि आयो, देखी रीत बहुत सुख पायो।
ठाकुर दरशन विप्रहिं पाया, धेनु चरावत गोविन्द राया।।4।।
बहुरि विप्र अपने घर गयो, भगति धन्ना की बहुत सरायो।
राम धन्ना सूँ बोले वाणी, साँची भगति तुम्हारी जाँणी।।5।।
अब तुम बात हमारी माँनो, काशी को तुम करो पयाँनो।
गुरू जाय करो रामानन्दा, तब तुम्हरे होई है आनन्द।।6।।
परम्परा की रक्षा के लिए, प्रभु धन्ना को आज्ञा दीये। धन्नो गमन काशी को कीना, हरखि रामानन्द दरशण दीना।।7।।

Scanned with CamScanner

।।दोहा।। धन्ना जाट को फिरि कहीं, यह चरित्र रचि ठाट।
जाहिह सुनत हरि भक्त की, देखि परे दृग बाट।।3।।

(भावार्थ) धन्ना जी के घर पर बहुत गायें थी। धन्ना जी अब कुछ बड़े हो गये थे और भगवान के साथ रहते दो तीन वर्ष बीत गये थे। उनके माता–पिता ने उन्हें गाये चराने व उनको दुहने का काम सौंप दिया। धन्ना जी दिन को गायें चराते और दोनों समय गायें दुहा करते थे। इनकी उम्र 8 साल की हो गयी। एक दिन श्री भगवान ने धन्ना से कहा कि मैं रोज–रोज तुम्हारी रोटी बगैर कुछ काम किये खाता हूँ। तुम अब बड़े हो गये हो और मैं भी काफी बड़ा हो गया हूँ। बड़े हो जाने पर रोटी कुछ काम किये बगैर नहीं खानी चाहिए। यह जगत की रीति है सो मुझे भी काम बताओ। तुमको तुम्हारे माता–पिता ने काम बताया है मुझे तुम बता दो। धन्ना ने कहा कि मुझे मेरे माता–पिता ने दो काम बताये हैं। अपन दो हैं और काम भी दो ही हैं सो अपन एक–एक काम बाँट लेते हैं। धन्ना ने भगवान से कहा कि तुम तो मेरी गायें चराकर लाया करो और मैं उनको दोनों वक्त दुह लिया करूँगा। प्रभु तो यही चाहते थे क्योंकि गऊ रक्षक जो ठहरे। दोनों ने अलग–अलग अपना–अपना काम शुरू कर दिया। हालाँकि ठाकुर अकेले ही गावों को लेकर जंगल में चले जाते थे मगर पीछे धन्ना का उनके बिना मन नहीं लगता था अतः वह भी भगवान के साथ में गायें चराने चले जाते थे। दोनों मिलकर गायें चराते और शाम को वापस घर चले आते थे।

सुरमुनि वन्दिन सकल चराचर सेव्य अखिल विश्वव्यापी स्वामी भगवान अपने भक्त बालक धन्ना के साथ में रहकर उनकी गायें चराने लगे और इस तरह से धन्ना के रोटी की सेवा करने लगे। धन्य हे ध न्ना। धन्ना जी के सुख का क्या ठिकाना। वह निरन्तर उस परमसुखरूप परमात्मा के साथ रहकर अप्रतिम अचिन्त्य आनन्द का उपयोग कर रहे हैं।

इस तरह समय बीतता गया। कुछ अर्से बाद धन्ना जी के गुरू (वही ब्राह्मण देवता) जो धन्ना जी को ठाकुर की सेवा दे गये थे वापस धन्ना जी के घर पर पधारे और धन्ना से पूछने लगे कि तुम

Scanned with CamScanner

भगवान की पूजा करते हो या नहीं, भोग लगाते हो या नहीं। धन्ना जी ने हँसकर कहा कि गुरू महाराज अपने अच्छे भगवान दिये। कई दिनों तक आपकी ओलूं की, उन्होंने ने तो दरशण ही दिये और न मेरी रोटी खाई। खुद भूखों रहा और मुझे भी भूखों मारा। अंत में एक दिन मैंने जब बहुत कुछ कहा, समझाया, मनाया तब प्रगट होकर सारी रोटी करने लगा। बड़ी कठिनता से मैंने हाथ पकड़ कर आध ी रोटी अपने लिए रखवायी। परन्तु महाराज वह है बड़ा प्रेमी, अब तो वह सदा मेरे साथ ही रहता है, मेरी रोटी खाता है और मेरी गायें भी चराता है। वह बड़ा ही प्यारा है, अति सुन्दर है, मोर मुकुट पहनता है, और बड़ी मीठी–मीठी बाँसुरी भी बजाता है। सुबह अंधेरे में आता है, और रात को अंधेरे में जाता है। कहाँ रहता है यह पूछने पर कहता है कि मेरा कोई ठिकाना नहीं जहाँ जगह मिल जाय वहीं रह जाता हूँ। अब तो मैं भी उसे छोड़ नहीं सकता। मेरे प्राण भी उसी में बसते हैं।

धन्ना जी की सारी बातें सुनकर ब्राह्मण ने बड़े आश्चर्य से पूछा अब वह तुम्हारा भगवान कहाँ है। धन्ना जी ने कहा अब वह मेरी गायें लेकर जंगल में चराने गये हैं। ब्राह्मण ने कहा कि क्या मुझे तुम उनसे मिलवाओगे नहीं। तब धन्ना जी ने कहा चलो मेरे साथ। ब्राह्मण उनके साथ जहाँ भगवान धन्ना जी गायें चराते थे गये। धन्ना जी ने ब्राह्मण से कहा कि यह मेरे भगवान वट वृक्ष पर बैठे गायें चरा रहे हैं। ब्राह्मण ने कहा कि मुझे तो उनके दरशण नहीं हो रहे हैं। धन्ना जी ने भगवान से कहा भगवान यह वही ब्राह्मण है जिसने मुझे आपकी मूर्ति दी थी और कहा था कि इनकी पूजा करना तथा भोग लगाये बगैर मत खाना सो आज तक वैसे ही करता हूँ। मैं इनकी आज्ञा का पालन हमेशा करता हूँ, इसीलिए यह मेरे गुरू हुए। आप इन्हें दरशण क्यों नहीं देते। क्या आप इनसे नाराज हैं (कटी करली है) या वह आपको रोटी नहीं खिलाते हैं या दुःख देते हैं। भगवान बोले यह कुछ भी बात नहीं है। तुमने जन्म जन्मान्तर के महान पुण्य एकत्र किये हैं और शुद्ध भक्ति व प्रेम भाव से मेरे दर्शन प्राप्त किये हैं। इस ब्राह्मण में इतना तपोबल नहीं है परन्तु इसने तुम्हारा गुरू

Scanned with CamScanner

बनकर बहुत पुण्य कर लिया है। इसी पुण्य के प्रभाव से इसे मेरे दर्शन हो सकेंगे। तुम इनकी गोद में जा बैठो। तुम्हारे पवित्र शरीर स्पर्श से इसे दिव्य नेत्र प्राप्त होंगे जिससे यह मुझे देख सकेगा। धन्ना जी ने ऐसा ही किया। ब्राह्मण भक्तवत्सल भगवान की अपूर्व छटा देखकर कृत्त–कृत्य हो गया।

धन्ना जी की बाल लीला समाप्त हुई समझकर भगवान ने इस मोहिनी रूप का चित्त सम्बन्ध ही रखने का निश्चय कर गुरू–दीक्षा की परम्परा रक्षार्थ धन्ना जी को गुरू मंत्र ग्रहण करने की आज्ञा दी। कहा कि काशी में श्री रामानन्द जी स्वामी से गुरू दीक्षा जाकर ग्रहण करो जिससे तुम्हारे आगे जाकर आनन्द होगा। फिर अपने उस प्रगट मोहिनी रूप को अन्तर्ध्यान कर लिया। उस ब्राह्मण ने भी ठाकुर जी के आज्ञा की पुष्टि की। जब प्रभु अन्तर्ध्यान हो गये तब धन्ना जी ने ठाकुर जी व ब्राह्मण की आज्ञा को शिरोधार्य कर काशी में भक्त श्रेष्ठ आचार्य श्री 1108 श्री रामानन्द जी महाराज से शिक्षा व दीक्षा ग्रहण करने चल पड़े।

।।श्लोक।। नमोः आचार्यवर्याय, रामानन्दाय धीमते।
मोक्ष मार्ग प्रकाशय, चतुर्वर्ग प्रदाय च।।

(भावार्थ) मोक्ष मार्ग के प्रकाशक, धर्मार्थ काम मोक्ष के प्रदाता तथा आचार्यों में श्रेष्ठ श्री रामानन्द जी महाराज को नमस्कार करता हूँ।।

।चौपाई।। दीक्षा लेय परम सुख पायो, धन्ना पुनि खेरीपुर आयो। पूरण ग्यान गुरू संग पाया, घर की ही भक्ति की आग्या पाया।।1।। हरि गुरू भाव एक ही भावे, साधु संत की सेवा लावे। सुमिरे राम साधु पुनि सेवे, अरू भूखे को भोजन देवे।।2।। और धर्मात्मा धन्ना की नारी, सोह पति की आज्ञाकारी। आन देव की करे न आशा, निशदिन जग से रहे उदाशा।।3।। समदृष्टि दृढ़ ध्यान लगावे, सब घट अंतर राम पिछाणे। घर में रहे उदासी ऐसे, जल के निकट बढ़ाऊ जैसे।।4।। घर घरणी संपत और सरबु, हरि के हेत कियो तब दरबु। गुरू किरपा ते यह

Scanned with CamScanner

बनी आई, घर की माँय राम लिवलाई।।5।।

।।दोहा।। दास धन्ना की परचरी, सुनजो चित्त लगाय।
दास अनन्त कथा कहि, हरि की आज्ञा पाय।।4।।

(भावार्थ) कुछ अर्से बाद गुरू जी श्री रामानन्द जी से शिक्षा ग्रहण कर धन्ना जी वापस घर लौट आये। उन्हें भगवान का तत्व ज्ञान प्राप्त हो गया था। अतः धन्ना जी अपने परम गुरू धन को हृदय की गुप्त गम्भीर गुफा में ही देखने लगे। वापस आने के बाद में उनका चित्त हमेशा भगवान की सेवा करना, भगवान को भोग धरकर ही बाद में भोजन करना, साधु–संतों की सेवा करना तथा आदर सत्कार में ही लगा रहता था। घर पर आये हुए अतिथि को खाली नहीं जाने देना यह प्रण ही कर लिया था।

धन्ना की शादी हो गयी। पुण्य के प्रभाव से स्त्री भी बड़ी धर्मात्मा मिली थी और पति की पूर्ण आज्ञाकारी थी। पति के बगैर किसी की दी हुई चीज को स्वीकार नहीं करती थी। संसार से बड़ी उदास रहा करती थी। पति की तरह प्रभु का ध्यान करती और सब में राम रूप ही समझती थी। जल के पास में बैठा हुआ पुरूष जैसे प्यासा रहता है उसी प्रकार यह भी रहा करती थी। घर में कोई कमी नहीं थी। फिर भी वह यह समझती कि यह अपनी नहीं है सब प्रभु की ही है। प्रभु की कृपा से ही ऐसी स्त्री का समागम होता है। अनन्तदास जी महाराज धन्नादास की यह कथा हरि की आज्ञा से कहते हैं उवसे ध्यान लगाकर सुनो।

।चौपाई।। धन्ना के धीरज मन माँहि, हरि सूँ हेत और सूँ नाँहि। राम नाम हरि को हिरदे राखे, मिथ्या सूँ कबहुँ न भाखे।।1।। सकल संग सेवा को भुखो, भक्ति बिछल गोविन्द गुण सुरो। इक दिन हरि ऐसे कीना, आँण बाट में दर्शन दीना।।2।। सेवग नाम तुम्हारो भाई, कछु संतन की टहल कराई। खीर खाँड़ घृत आटो दीजे, मिनक जनम को लावो लीजे।।3।। बोले धन्नो सुनो हो स्वामी, तुम मेरे हो अन्तरजामी। मैं तो बीज खेत ले जाई, गेला में ये सामग्री नाँई।।4।। अब तुम निज द्वारे जावो, मनसा

Scanned with CamScanner

हो सो भोजन पावो। मेरे घर सुलक्षणा नारी, बहु विधी सेवा करे तुम्हारी।।5।। इतने सुन वैरागी बोला, धन्ना भक्त उत्तर क्यूँ देता। संत ललचाय कितने दिन जीजे, जो कछु हो सो हाजर कीजे।।6।। खोल समेत पोटली दीजे, दरसण करके लावो लीजे। सेवग के मन ऐसी आई, साधु बचन मेट्यो क्यों जाई।।7।। धन्नो सुनत ढील ना कीनि, खोज समेत पोट सब दीनि।।

।।दोहा।। गेहूँ ले तुँबो दे हरिजन गया, धन्नो पहुच्यो खेत।
ताते दास अनन्त कहे, सेवग सरबस देत।।5।।

(भावार्थ) एक समय धन्ना जी के पिता ने उन्हें खेत में बोहने को बीज देकर भेजा। उधर भगवान ने धन्ना की परीक्षा लेने को संतों की टोली भेजी। धन्नो जी के खेत में जाते समय वहीं रास्ते में संतों की टोली मिल गई, संते भूखे थे। संतों ने धन्ना जी से आग्रह किया कि हम भूखे हैं, हमें दूध, शक्कर, घृत और आटा दो तो रसोई बनाकर प्रभु को भोग धर करके खुद भोजन कर तृप्त हो जायेंगे। इस पर धन्ना जी ने कहा कि प्रभु आप हमारे घर पधारो, मेरे घर मेरी शुलक्षणा नारी है वह आपकी बहुत प्रकार से सेवा करेगी। यहाँ पर तो मेरे पास में सिर्फ खेत में बोहने के लिए बीज गेहूँ ले जा रहा हूँ, वही है। रास्ते में जो आपने सामग्री मांगी वह तो मेरे पस नहीं है, घर पर सब कुछ मिल जावेगा। स्वामी आप अर्न्तयामी हो सब कुछ जानतो हो। ऐसे वचनों को संतों ने सुना तो बोले कि धन्ना भक्त यह कैसे उत्तर देगा। संत तो सिर्फ प्रेम के भूखे हैं, ज्यादा लालच करके कितेक दिन जीना है। तुम्हारे पास जो कुछ अभी हाजर हो सो दे दो हम तो उसी से अपना गुजारा कर लेंगे।

यह स्मरण रखना चाहिए कि जहाँ अभावग्रस्त गरीब खाने के लिए अन्न चाहता है वहाँ मानो साक्षात् भगवान ही उसके रूप में हमसे सेवा चाहते हैं। ऐसे मौके को चूकने वालों को पीछे पछताना पड़ता है। धन्ना जी सरीखे भक्त भला क्यों चूकने लगे। धन्ना जी ने गेहूँ तो संतों को दे दिये, परन्तु माता–पिता के उर से यों ही घर लौटना उचित न समझकर वह खेत में चले गये और यों ही जमीन

Scanned with CamScanner

पर बिना बीच के खाली हल चलाकर लौट आये। हाँ संतों ने जाते समय एक तूँबा धन्ना जी को दिया था उसके बीच खेत की मांठ पर बो दिये थे। अनन्तदास जी कहते हैं कि प्रभु जो सेवग होता है वह अपना सब कुछ संतों को मांगने पर दे देता है।

।चौपाई।। हाली खेत में हल जो बावे, धन्ना जी की बाँटा जावे। धन्नो कहे सुल हाली भाई, बीज तो संतों को दियो खवाई।।1।। हाली कहे बीज और आँणो, मन में भयो बोत बिलखाँणो। धन्नो कहे सुण हाली भाई, तेरो बाँटो कहुँ नाँहि जाई।।2।। पाड़ोसी के निपजे जे तो, थूँ थारो भरी लीजे ते तो। घराँ जायकर केऊँ काँई माता–पिता देवे के नाँई।।3।। पाड़ोसी सब बावन लागा, तूँ भी अब जोतेनी लागा। राख आज तूँ राम भरोसो, करता करे सोई खरोसो।।4।। राम राम आँपे दोऊँ केवो, आँथण सुदा हल जो बोवो। राम नाम की महिमा भारी, गावे सुर–मुनि दुनिया सारी।5।। तब हाली हौनु बैल चलाया, आँथण सुदा खेत जो बाया। बाय खेत हाली घर आयो, हालण को जो चरित सुनायो।।6।। स्वामी मतो आज यह कीनो, बीज बाँट संतों को दीनो। सारो दिन खाली हल फेर्‌यो, गेहूँ चनो एक न गेर्‌यो।।7।। इतनी सुँण हाली की नारी, करे क्रोध और देवे गारी। जाय बावरा तूँ काँई खासी, वो तो मोड्‌यो माँगर लासी।।8।। हालण लड़ी सुणो हरिदासी, जाय हालको दे विश्वासी। धन्ना की नारी कहे हालण नाई, थारो बाँटो कटे नहिं जाई।।9।। थारे मन विश्वास न होई, चाल कहे तहाँ देऊँ कहाई। धन्नो कहे कड़वा मत भाखो, दिन दस बात गुपत ही राखो।।10।। किया किया हरिजी का देखो, पीछे तुम करी लीजो लेखो। भये पाँच दिन उगा तबही, हाली गयो खेत के माँही।।11।। हाली के मन भयो आनन्दा, या तो कृपा करी गोविन्दा। फिर कर देखा ऐसा खेल, गेर गेर तूँबा की बेल।।12।।

Scanned with CamScanner

।।दोहा।। धन्ना के धीरज धणी, साँचे मन विश्वास।
ताते दास अनन्त कहे, हरिजी पुरे आस।।6।।

(भावार्थ) धन्ना जी के खेत पर हाली रहता था। धन्ना जी जब देर से खेत पर गये तब हाली ने कहा स्वामी पाड़ोसी सभी खेत जोतने लग गये हैं। आप जल्दी से बीज दो तो अपन भी खेत जोतें। धन्ना जी ने कहा कि सुँण हाली भाई बीज तो मैं संतों को दे दिये हैं। सँतो ने जाते समय यह एक तूँबा दिया है सो खेत तो आपन दौनु राम राम कहते हुए शाम तक बालो और इस तूँबे को बीजों की मेंड़ पर बादो। प्रभु की जैसी मर्जी होगी वैसा ही होगा। तब हाली ने कहा कि स्वामी घर जाकर दूसरा बीज और ले आवो। धन्ना जी ने कहा कि माता–पिता देवे के नहिं क्योंकि उनको कहूँगा क्या। मन में बहुत ही पछतावो कर हाली को कहा कि तेरे हिस्से का बाँटा दूसरों के बराबर दे दूँगा घबराना मत। आज तो प्रभु का भरोसा राखकर खेत जोतो। रामनाम की महिमा बहुत बड़ी है, देवता–मुनि और सारा संसार उनका नाम लेता है। तब हाली ने दौनुँ बैलों को राम नाम लेकर चलाना शुरू किया। हल के न तो नाई बाँधी और न गेहूँ व चने का एक भी बीज डाला क्योंकि पास में दौनों के थे ही नहीं। दौनों ने शाम तक खाली हल खेत में चलाया। शाम को हाली ने घर जाकर अपनी घरवाली हालण को सारी बात बताई। कहा कि धन्नाजी ने सारा बीज तो संतों को बाँट दिया और सब दिन खेत में खाली हल चलाया। गेहूँ व चाना को एक भी बीज को दाँणों खेत में नहीं डाल्यो। एक तूँबे के बीजों को खेत के मेंड़ पर जरूर बोया है। इतनी सुनकर हाली की स्त्री हालण क्रोध में आकर बोली कि वह धन्ना तो मांगकर खा लेगा मगर तूँ मूर्ख क्या खावेगा। धन्ना जी के घर वह हालण जाकर धन्ना जी की स्त्री हरिदासी से लड़ने लगी। इस पर हरिदासी ने कहा कि हालण बाई सुनो तुम्हारा बाँटा तुम्हें मिल जावेगा पाँच दस दिन बात छाँने राखो फिर आपकी मर्जी हो सो कर लेना। इस पर भी तुम्हें विश्वास न हो तो कहीं भी चलो तुमको कहला दूँ। भगवान पर भरोसो राखो हरि जी सब भली ही करेंगे। धन्ना जी ने कहा कि इतना कड़वा नहिं बोलना चाहिए। प्रभु

Scanned with CamScanner

सबको देते हैं। वह सबकी सुनता है उसी अनुसार सबको देता है।

उधर भगवान ने धन्ना जी के बिना मांगे ही उनका गौरव बढ़ाने अपनी अघटन घटना घटाई। माया से खेत को सब खेतों से बढ़कर हरा भरा कर दिया। दस दिन बीत जाने के बाद हाली खेत को देखने गया तो उसके मन को बहुत आनन्द मिला। प्रभु को मन में कहा कि यह क्या कृपा की है और फिर इधर–उधर चारों तरफ देखा तो पूरे मांठ पर तूंबे की बेले ही लगी है। धन्ना जी के खेत की प्रशंसा बहुत होने लगी। यह सुनकर धन्ना जी ने सोचा कि मैंने तो खेत में एक भी बीज नहीं डाला था फिर यह सुन्दर खेती कैसे हो गई।, खेत सूखा व खाली पड़ा होगा इसी से सम्भवतः लोग हँसी उड़ाते होंगे। धन्ना जी के मन में सच्चा विश्वास था। धीरज भी बहुत था। अनन्तदास जी कहते हें कि ऐसों की प्रभु आशा पूर्ण करते हैं।

।।चौपाई।। हाली एक हथाई कहर, स्वामी की गति कही न जाई।
धन्ना को चरित सुनाऊँ आख्याँ देखी कह सुनाऊँ।।1।।
हल के गले नाई नहिं बाँधी, धन्ने समेत मुट्ठी नहिं साँधी।
अब देखूँ तो उगा घणा, बिन बाया गेहूँ और चना।।2।।
इतनी सूँण अचम्भो होई, गोविन्द की गति लखे न कोई। हाली हालण डरिया दोई, जाय धन्ना संग दियो रोई।।3।। चूक हमारी बगसो स्वामी, तुम दयाल हो अन्तरजामी। धन्नो कहे चूक है नाँहिं, राम बिराजे सब घट माँहि।।4।। अब तुम बात हमारी माँनो, जन सेवा की संकन आनो। हरि भक्तन को सरबस दीजो, एही काम आपनो की जो।।5।। तब हाली को साँसो भागो, हरि भक्तन की सेवा लागो। पाड़ोसी के उगा ऊँणा, धन्ना के खेत में उंगा दूँगा।।6।। तूँबा दोली बाड़ कराई, बाड़ सबी बेलड़िया छाई।।

।।दोहा।। साँचे मन सुमिरन करे, राम जनां सूं हेत।
तो दास अनन्त कहे, हरि निपजायो खेत।।7।।

(भावार्थ) हाली जब धन्ना जी के खेत को देखकर वापस गाँव में आया और गाँव वालों को इस तरह से कथा कहने लगा कि धन्ना जी

Scanned with CamScanner

ने हल के बींजणी नहीं बाँधी और न हीं धान की मुट्ठि ही भरी। एक भी गेहूँ अथवा चने का दाँणा नहीं गेर्‌या फिर भी खेत में गेहूँ और चना दुगने उगे हैं। स्वामी की लीला कुछ और ही है। धन्ना बड़ा भारी भक्त है उनके चरित्र को कौन जाने यह मैंने अपनी आँखों से देखा है। हाली बहुत ही घबराया और अपनी स्त्री को जाकर सारी बात बताई। सुनकर वह भी घबरा गई। दौनों ने धन्ना जी के घर पर जाकर रोने लगे और कहने लगे कि हमसे गलती हो गयी है हमें माफी दो आप दयालु हो। धन्ना जी ने कहा कि इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। प्रभु सबके घट में विराजते हैं। सब कुछ प्रभु की कृपा से ही हुआ है तथा यह सब संतों की सेवा का फल है। जब खुद धन्ना जी ने खेत को जाकर देखा तो खेत लहलहाता और उमड़ता पाया तब तो उनके आश्चर्य का पार नहीं रहा। प्रभु की सच्ची माया समझकर मन ही मन उन्हें प्रणाम किया। धन्ना जी के हृदय में प्रेम का समुद्र उमड़ पड़ा। हाली को कहा कि तुम तो अपना हिस्सा ले लेना बाकी का धान मैं तो साधु–सन्तों को दूँगा। जब मैंने एक भी बीज खेत में नहीं बोया और यह धान हो गया सो यह मेरा नहीं है। इस पर तो सिर्फ सन्तों का ही हक है। अनन्तदास जी कहते हैं कि सच्चे मन से जो राम के प्रेमी भक्तों की सेवा करता है उसके खेत को प्रभु ने ऐसा किया है।

।।चौपाई।। जो होत बाहरा आछा लागा, तूँबा बहुत सपूण लागा।
खरा पका सब भेला कीजा, सँता काम राम जी दीना।।1।।
एक समे धन्ना को सुजी, मात पिता को श्राद्ध करोजी।
संत को न्योतो देके आया, दूसर दिन संत जो आया।।2।।
बहूरि मंडली ऐसी आई, तामें संत बहुत सुखदाई। धन्नो
कहे धन मान हमारा, ऐसा संत भजे पधारा।।3।। कर
दण्डवत चरण गह लीना, दया करि मोय दरशन दीना।
सबको आसन दियो बिछाई, ता पीछे हरिदासी आई।।4।।
बैठ बेठकर कीना परनामा, आज हमारे पूरण कामा। सब
संतन ऐसी विधी देखी, ओ तो भक्त है बड़ो विवेकी।।5।।
ऐसी ही याकी घर की नारी, जैसी रम्भा राम की प्यारी।

Scanned with CamScanner

धन्ना कहे अब विलम्ब न कीजे, लाऊँ रसोई आज्ञा दीजे।।6।। संत कहे आज्ञा हरि केरी, ल्याव रसोई इच्छा तेरी। आटो घृत और चावल लायो, धीणों घणों दूध मंगायो।।7।। और कछु तरकारी कीजो, मन भावे तो दही फिरि लीजो। राम कृपा ते हे सब कोई, इच्छा हो तो लेऊँ मंगाई।।8।।

।।दोहा।। तन मन धन अर्पण करे यहि विधी सेवे संत।
ताकूं राम निवाज ही, गावे दास अनन्त।।8।।

(भावार्थ) तूँबों के बेलों के आड़ी जो बाड़ की थी उसके ऊपर बहुत बड़े –बड़े तूँबे लगे । ठाकुर का हिस्सा (लगान) उसको देकर बाकी बचे हुए तूँबे घर पर ले आये और कहले लगे कि संतों के काम की चीज भी प्रभु ने दी है। कुछ अर्से बाद धन्ना जी के जी में आया कि सभी लोग अपने–अपने पूर्वजों के श्राद्ध करते हैं सो मैं भी अपने माता–पिता का श्राद्ध करूँ। ऐसा सोचकर वह अपने गाँव से कुछ दूरी पर पहाड़ी पर साधु की घूँणी थी वहाँ जाकर साधु महात्मा से विनती की कि महाराज कल दिन आप हमारे यहाँ आकर भगवान का प्रसाद लेना। ऐसा कहकर धन्ना जी घर पर आकर अपनी स्त्री हरिदासी से कहा कि मैंने अपने माता–पिता का श्राद्ध करने का निश्चय कर घूँणी वाले साधु बाबा को भोजन का निमन्त्रण देकर के आया हूँ सो तुम उनको सब सामग्री जो वह कहे सो दे देना। अगले दिन सुबह ही साधुओं की मण्डली आई। धन्ना जी ने साधु–सन्तों को देखकर कहा कि धन्य भाग्य हमारे सो हमारे घर सन्त पधारे। धन्ना ने दण्डवत् कर चरण पखारे और कहा कि मुझ पर दया करके मुझे दरशन देकर हमारे घर को पवित्र किया। साधु–सन्तों को आसन देकर उस पर बैठाये। उसके बाद में हरिदासी आई और सबके सामने बैठ–बैठकर प्रणाम किया और कहा कि सब काम पूरण हो गये। सन्तों ने ऐसी विधी देखी तो कहने लगे कि यह भक्त तो बड़ा विवेकी है और ऐसी ही इसकी घर की नारी भी है जैसे राम की स्त्री रम्भा (सीता) आज्ञाकारी है। फिर धन्ना ने कहा कि प्रभु अब विलम्ब मत करो हमें आज्ञा दो तो रसोई लाऊँ। संतों ने कहा कि

Scanned with CamScanner

इसमें आज्ञा कैसी जो भी तेरी इच्छा हो सो रसोई ले आवो। इसके बाद भोजन की सभी सामग्री धन्ना जी ने हरिद्वारी से जो कहा था वह सब आटो, घृत, खाँड़, चावल, दाल वगैरा सब ले आई। घीणों बहुत हो इसलिए दूध भी ले आई और कुछ तरकारी भी लाई तथा दही भी ले आई। दोनों ने हाथ जोड़कर कहा कि प्रभु की कृपा से सब कुछ है और भी जो इच्छा हो सो मांग लेना। हम तो इन सबके रखवाले ही हैं यह जो कुछ भी है वह सब कुछ प्रभु का ही है। तन–मन–धन जो भी है सब कुछ उसी प्रभु का है। अनन्तदास जी कहते हैं कि ऐसे भक्तों का प्रभु ही रखवाला होता है।

।।चौपाई।। एक मण्डली सामग्री ले जाई, ता पीछे फिरी दूसरी आई। एठि विधी सूं बहुरि आई, धन्नो घबरा के छिपि जाई।।1।। सँतों ने धुँणी जो धुकाई, सगरो गाँव धुँआ सूं छाई। न्यूतो संत धन्ना को खोज्यो जाई, हम क्या भुखों ही रह जाई।।2।। चल कर भोजन दे भाई, और सँतों कूँ दक्षिणाँ दे आई। ऐही विधी देखी गाँव की शोभा, तो पल्टीयो गाँव को नामा।।3।। पाय प्रसाद अरू कथा उचारी, दरशण को आवे नर नारी। कथा कीर्तन बहु विधी कीना, भयो आनन्द प्रेम रस भीना।।4।। धन्नो कहे एक अरज सुनीनो, दक्षिणां में एक एक तूँबो लीजे। संत जबी तूँबा मंगवाया, ढोल देख सब के मन भाया।।5।। ले ले देखे और दिखाया, इतना बीज कहाँ से आया। आँण करोती मूंडा करीया, देखे तो गेहूँ सूं भरीया।।6।। देखत भयो अचम्भो भारी, धिन हो रामजी कला तुम्हारी। कर कर मूँड़ा दिया उतारी, रास भई गेहुँआं की भारी।।7।। गेहूँ धन्ना भक्त को दिया, तूँबा एक एक सब लिया। जेता कण भक्ता ने दिया, तेता मण धन्ने लिया।।8।। ओ अचरज माँनो मन कोई, करता करते सोई सब होई। धन्ना भक्त को खेत निपज्यो, गायें धन्ना की चरावण आयो।।9।। परखन सारू संत भेजीया, लाज राखन सारू रूप धारिया। कोटिन भक्त भीर हरि आये, होय चतुर्भुज रूप दिखाये।।10।।

Scanned with CamScanner

।।दोहा।। दास अनन्त कथा कहि, धन्ना को यशगान। रामानन्द निज शिष्य की, महिमा कही ना जाय।।9।। अब खेरीपुर खारो लग्यो, उपज्यो आनन्द। धन्ना उत्तर दिशि रम गया, छोड़ मोह का फंद।।10।। पिता नगराज, माई गंगा गढ़वाल। तासके पुत्र जनमियो, धन्नो घेतरवाल।।11।। आखर तूँ खर मात रा, घट वट सोच विचार। मैं मूर्ख समझूँ नहीं, लीजो संत सुधार।।12।।

(भावार्थ) पहली मंडली सामग्री लेकर गई, फिर दूसरी मंडली सामग्री लेकर गई, फिर तीसरी आई, फिर चौथी–फिर पाँचवीं इस तरह सुबह से शाम तक ताँता लगा रहा। वैसे धन्ना जी ने आज का दिन बहुत शुभ समझाा मगर यह देखकर घबरा गये कि भोजन की सामग्री खत्म हो रही है और साधुओं की मँडलियाँ आती ही जाती हैं। अतः वह डरकर पास की पहाड़ी में गुफा थी उसमें जाकर छुप गए। उधर हरिदासी ने जब सामग्री सब खत्म होती देखी। मगर घबराई नहीं और गाँव के बनिये से उधार लाकर देना शुरू कर दिया। साधुओं ने अपनी–अपनी सामग्री ली और धन्ना के घर के बाहर गाँव में जगह–जगह रोटे (बाटे) बनाने के लिए कण्डों (छाँणो) की धुँणी जगाई। इतने साधु आ गये थे कि पूरे गाँव व उसके आसपास के खेतों में भी जगह–जगह धुँणी धुकने लगी। इसलिए धुँआ इतना हो गया कि गाँव पूरा का पूरा उस धुँवे से छुप गया। अतः उस दिन से उस गाँव के लोगों ने तथा गाँव के ठाकुर ने गाँव का नाम खेरीपुर से हटाकर धुँआ रख दिया।

भगवान ने देखा कि भक्त धन्ना का मान–मर्दन हो जायेगा अगर धन्ना यों ही छुपकर बैठा रहा तो। तब भगवान ने उसी साधु का भेष धारण किया जिसको पहले दिन धन्ना जी ने श्राद्ध के लिए भोजन का न्यौता देकर आये थे। धन्ना जी जहाँ छिपकर बैठे थे जाकर कहा कि भगत तुमने तो मुझे प्रसाद पाने का निमंत्रण दिया था और खुद यहाँ पर छिपकर बैठे हो। मैंने तुम्हें बहुत ढूँढ़ा था। मुझे क्या भोजन नहीं कराओगे मुझे बहुत भूख लगी है। धन्ना जी ने साधु भेषधारी प्रभु से कहा मैं तो इतने साधुओं को भोजन नहीं करा सकता। जो सामग्री

Scanned with CamScanner

मेरे घर पर थी वह सब मैंने साधुओं को दे दी। अब तो मेरे पास आपको भोजन कराने को कुछ भी नहीं बचा है। साधु ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो बाहर चलकर देखो। साधुओं ने अपनी–अपनी अलग–अलग जगह धुणीयें लगा रक्खी हैं। कितना धुँआ हो रहा है। इस धुँए के कारण से गाँव भी दिखाई नहीं दे रहा है। साधु जब भोजन कर लेंगे तो उन्हें दक्षिणा भी देनी पड़ेगी। भोजन के पश्चात अगर दक्षिणा नहीं दी जाती है तो वह भोजन कराया हुआ निष्फल कहलाता है। तब धन्ना जी ने डरते–डरते बाहर निकल कर देखा तो आश्चर्यचकित रह गये। साधु धन्ना जी को साथ में लेकर उसके घर ले आये। भोजन कर साधुओं की मंडलियाँ आने लगी। फिर कथा कीर्तन होना शुरू हुआ। गाँव के नर–नारी इसका आनन्द लेने इकट्ठे हो गये और सन्तों के दर्शन का लाभ उठाया। जब सब साधु इकट्ठे हो गये और कहने लगे कि हमने भोजन तो बड़े आनन्द से कर लिया है अब तुम हमें हमारी दक्षिणाँ दिलाओ। धन्ना जी के पास में दक्षिणाँ में देने को पैसा तो था नहीं। खेत में तूँबे हुए थे विचार करके दक्षिणाँ के बदले में तूँबे का एक–एक पात्र ही सबी सँतों को दे दूँ जिससे इनको पानी पीने में शुभिता रहेगी। धन्ना जी ने सब साधुओं से इसकी आज्ञा लेकर तूँबे मँगाये। साधुओं ने भी तूँबे देखकर मन लिया। तूँबे बहुत बड़े–बड़े थे। हाथों में लिये तो बड़े भारी मालूम हुए इसलिए उनको वहीं चीरने की सोचकर करोती से मुंडे करने शुरू किय। संतों ने जब तूँबे चीरे तो वह सब गेहुँओं से भरे थे। साधु गेहूँ तो धन्ना जी के घर पर ही निकाल कर डालते गये और तूँबे अपने–अपने साथ लेते गए। जब सबने ऐसा देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना ना रहा। साधुओं ने कहा कि जेता कण धन्ना ने भक्तों को दिया तेता कण प्रभु ने धन्ना को दिया। जब यह बात गाँव के ठाकुर के कानों में पड़ी तो उसने भी वही तूँबे जो उसको हासल में धन्ना जी ने दिये थे मँगवा कर फौड़ाये तो उसमें एक भी गेहूँ का दाना नहीं निकला। प्रभु की माया समझकर धन्ना जी के पास माफी मांगने चला आया और कहा कि आज से तेरे खेत का हासल हम नहीं लेंगे। तुम्हें लगान से माफी देते हैं तुम मेरे हिस्से

Scanned with CamScanner

के लगान से साधुओं की सेवा किया करो। जब सब तरह से धन्ना जी साधु–सँतों की सेवा से निपट गये तो हरिदासी ने कहा स्वामी आप तो न मालूम कहाँ चले गये थे। मैंने बनिये से सामग्री उधार लाकर साधुओं को दी थी। अतः अब जब प्रभु ने वापस अपने को सब कुछ कर्ज चुकाने को दे दिया है तो उनका कर्ज चुकता कर दो।

दूसरे दिन धन्ना जी ने उन गेहुँओं को जो तूँबे में से निकले थे बनिये का कर्ज चुकाने को लेकर गये और महाजन से कहा कि आपका जो भी हिसाब हो वह सब मय ब्याज के ले लो। प्रभु ने शायद इसलिए दिये हैं। महाजन ने कहा कि तुमने तो कर्ज का हिसाब कल ही चुकता कर दिया था। नगदी पैसे शाम पड़ने के बाद देकर गये थे। तथा अपने हाथों से मेरी इस भही में जमा किये हैं। धन्ना जी ने कहा सेठजी मैं तो कल देर रात तक साधु–संतों की सेवा में लगा था। आने की फुरसत ही नहीं थी और पैसा तो मेरे पास नगदी था ही नहीं देने को आया कहाँ से। नगद नहीं होने से तो हरिदासी ने आपसे उधार लिया था। आपने बड़ी दया कर मेरी लाज रक्खी है। मैंने साधुओं को दक्षिणा में तूंबे दिये थे उसमें से यह गेहूँ निकले हैं उसी को लेकर ही मैं आपका कर्ज चुकाने आया हूँ। आप भूल रहे हैं अच्छी तरह से याद करके देखो और मुझसे मेरा कर्ज ले लो। मैं तो अनपढ़ गँवार हूँ लिखा कैसे। मैं प्रभु के कर्ज के अलावा किसी भी दूसरे का कर्ज अपने ऊपर नहीं रखना चाहता हूँ। इस पर सेठजी ने गाँव के दूसरे लोगें को बुलाकर भही दिखाई। उधर सेठानी जी ने भी कहलवाया कि तुमने खुद ने ही कल रात को हमारा कर्ज चुगता कर दिया था। मैं भी उस समय सेठजी के पास में किसी कामवश बैठी थी। जब हमारा कुछ भी कर्ज तुम्हारे ऊपर नहीं है तो हम तुमसे झूठा दुबारा कर्ज कैसे ले सकते हैं। जब इतनी बातें हो चुकी तो धन्ना जी ने बहुत देर तक सोचा। फिर कहा सेठजी व सेठानी जी आप दोनों धन्य हैं जो आपने मेरे प्रभु के दर्शन किये। वह कर्ज चुकाने वाला मैं नहीं था मेरे भगवान (ठाकुर) ने मेरा रूप धर कर आपको दर्शन दिये हैं।

जब मेरे ठाकुर को मेरी इतनी चिन्ता है तो फिर मैं इस मोह

Scanned with CamScanner

माया के जाल में क्यों पड़ा हूँ। बार–बार मेरे ठाकुर को तकलीफ देता हूँ। अब मैं क्यों नहीं मोह माया को छोड़कर उसी ठाकुर का भजन करने चला जाऊँ। उसी समय ऐसा निश्चय कर धन्ना जी ने घर पर आकर हरिदासी से सब कुछ जो महाजन के यहाँ पर हुआ था बतला दिया और फिर कहा कि अपने भगवान को अपनी इतनी चिन्ता है तो अपन भी सब कुछ छोड़कर भगवान का भजन करने चले चलो। तब हरिदासी ने कहा कि मैं तो कहीं नहीं जाती। घर पर रहकर साधु संतों की सेवा करूंगी तुम्हें अगर भजन करने ही जाना है तो तुम भले ही चले जावो। इस पर धन्ना जी ने गाँव व घर छोड़कर उत्तर दिशा की ओर चले गये। न तो वापस ही आये और न ही बाद में उनका कुछ पता चला।

अनन्तदास जी ने धन्ना के यश की कथा कही है। श्री रामानन्द जी महाराज के इस शिष्य की महिमा अपरम्पार है कुछ भी नहीं कहीं जा सकती। धन्ना जी को अब खेरीपुर खारा लगने लगा क्योंकि मन में कुछ और ही आनन्द उमड़ पड़ा था। इसलिए मोह माया को छोड़कर उत्तर दिशा को चले गये। मैंने तो यह जैसी सुनी वैसी अक्षर से अक्षर कही है। इसमें अगर कुछ घट बढ़ हो तो सोच विचार कर संत लोग सुधार लेना। मैं तो मूर्ख हूँ ग्यानी संत ही इसका विचार करें।

मैंने काफी खोजबीन की मगर उनके शरीर त्यागने के स्थान का व समय का पता न चल सका। धन्ना जी का खेत–खलिहान आज भी ज्यों का त्यों ही है। धन्ना जी के खेत के पास में उनका एक कुआँ है उसका पानी सिर्फ उनके ही खेत के लिए काम में आता है। दूसरे अगर लेना चाहे तें नहीं ले सकते हैं। इतने वर्ष बीत गये हैं मगर आज तक किसी ने भी उस खेत का हासिल नहीं लिया और न उसका कोई मालिक ही बना है। मौजूदा सरकार भी उसकी बिगोड़ी नहीं लेती है। यह खेत सब गाँव वाले मिलकर बोते हैं और मिलकर जो भी उसका धान होता है उसे पहाड़ी पर गुफा में जो धुँणी है उस साधु को ले जाकर दे देते हैं। आस पास के गाँव वाले अपने खेतों में धान तथा खेत में कुछ खराबी महसूस करते हैं तो वे धन्ना जी के

Scanned with CamScanner

खेत की मिट्टी लाकर अपने खेतों में डाल देते हैं जिससे उनके बड़े निपजाऊ व अच्छे हो जाते हैं। यह सब बातें मुझे वहाँ जाने से मालूम हुई।

वि. सं. 2000 से 2006 तक यह शरीर इसी खोजना में लगा रहा था। जब पुस्तक लिखने की इच्छा हुई तब काफी प्रमाण इकट्ठे करने पड़े। समय का अभाव था। गृहस्थ सम्भालना, दो मंदिर होने से उनका भी कार्य करना। पुस्तक भी पूर्ण करने की प्रबल कामना थी। लगन थी, मनसा थी, प्रभु की इच्छा थी, उस पर कुछ स्वजातीय प्रशंसनीय महानुभावों की प्रेरणा थी। अतः यह कार्य अब जब इसका समय आया तो स्वतः ही पूर्ण हो रहा है।

इस पुस्तक को पूर्ण करने के लिए भारतवर्ष में जगह–जगह देश में भ्रमण करना पड़ा था। पूछताछ से जो भी कुछ मिलता व देखता उसे नोट करता था जिसमें मुझे 6 वर्ष व्यतीत हुए। भारतीय मुद्रा भी खर्च करनी पड़ी। किन–किन जगह जाना पड़ा उनके नाम बताने से तो कोई असर नहीं होना है हाँ जिन – जिन पुस्तकों से इसके लिए सामग्री एकत्र करनी पड़ी उनके नाम नीचे दिये जा रहे हैं। अगर किसी को कुछ शंका हो तो इन पुस्तकों को देख लें। खाली मुँह से कहने व कानों के सुनने से समय नष्ट होता है और मन में क्लेश उत्पन्न होता है।

कहावत सिद्धार्थ है :

वर्षा सके न बूंद इक, हिला सके नहिं पान।
फिर भी कहते हम करें, यह दुःखदा अभिमान।।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे लम्बी खजूर।
बैठने को छाया नहिं, चखने को फल दूर।।

## (पुस्तकों के नाम)

श्री वाल्मीकि रामायण, श्री रामचरित्र मानस, श्री अध्यात्म रामायण, श्री मद्भागवत, मनुस्मृति, श्री मद्भागवतगीता, दक्षस्मृति, पुलस्त्य संहिता, श्री मार्कन्डेय पुराण, सरोज गीलका, याज्ञवल्क्य संहित, विष्णु पुराण, आनन्द संहिता, बृहद् ब्रह्म संहिता, नारद पंचरात्र,

Scanned with CamScanner

पाराशर स्मृति, वैष्णव कुलभूषण सार संग्रह, श्री राममन्त्र परम वैदिक सिद्धान्त, वशिष्ठ स्मृति, श्री रामानन्द जन्मोत्सव खण्ड, नामा जी कृत भक्तमाल, गुरू ग्रन्थ साब, संत गाथा, कबीर ग्रंथावलि, दी–शिक्ख रेजिजन, उत्तरी भारत की संत परम्परा, रत्नावली, मीरा की पदावलि, भारत का धार्मिक इतिहास, संतवाणी, भक्त चरित्र, भक्ताँक, भक्त बालक, मारवाड़ का इतिहास, धन्ना भक्त की परिचरी तथा राजपूताना का इतिहास में तो धन्नावंशी जाति की पहिचान और यह जाति कहाँ–कहाँ पायी जाती है, इनका कर्म व कर्त्तव्य का भी वर्णन किया हुआ मिलता है।

## (धन्ना जी के खुद के बनाये हुए पद)

।।छन्द।। रे चित चितसि न दीन दयाल हि, हरि बिन ओर न कोई। जो ध्यावहि ब्रह्मांड खंड जो करना करे सो होई।।1।। जिन जननि के उदर उदि कथैं, पिंड कियो दश द्वारा दियो। अघार अघनि मुख राखे, ऐसा खसम हमारा।।2।। कुरमी अंड धरे जल भीतरी, खीर पंक तहाँ नेहि। पूरन परमानन्द पयोधर, चित चित तिह बाई।।3।। पाहन में कीट गोपि सब हल थैं, मारग कतहूँ नाहीं। कह धन्ना जाको पूरक तूँ, काँई जीव बड़राई।।4।।

।।कवित्त।। गोपाल राई तेरो आरतो, जे जन तेरी भक्ति करतो, तिण रो काज संवारतो। दालि सीधा मांगु घी व, हमारा खुसी करो निति जीन। पनही छाजन छींका, जाज मांग्यो संत सीका।।1।। गऊ भेंसी मांगु लोरी, इक ताजन तूंरी च गैरी। घर की ग्रीह न चंगी, जरा धन्ना लेवे संगी।।2।।

## (धन्ना भक्त की लाँवणी)

धन्नो भक्त बड़ो तपधारी, जांरो जश गावे नर नारी। मनसा पूरण होवे उणाँरी, जे मिलकर भक्तों को जशगाई।।धन्नो भक्त।।

एक दिन पंडित जी घर आया, धन्नो जी आदर दे बैठाया। पंडित जी गीता ग्यान सुनाया, गीता सुनकर के सुख पाया।।1।। धन्नो भक्त।।

अपना भाग्य उदय हो आया, धन्नो जी मन ही मन हर्षाया। पंडित जी पूजा करवा लागा, मन का भाग धन्ना का जागा।।2।। धन्नो भक्त।।

Scanned with CamScanner

धन्नो जी यूँ विनती करवा लागा, आप गुरूजी बन जावो आगा। अर्जी हमारी सुन लीजो, म्हाँने एक ठाकुर जी दे दीजे।।3।। धन्नो भक्त।।
म्हाँपे किरपा आप करीजो, एक मौका म्हाँने दे दीजो। धन्ना ने पंडित जी समझावे, थाँसू सेवा वण नहिं आवे।।4।। धन्नो भक्त।।
अब के मुड़ के पाछा आऊँ, जद थाँने ठाकुर जी दे जाऊँ। थाँने विधी सारी बतलाऊँ, तब तक थूँ बड़ो होय जाई।।5।। धन्नो भक्त।।
धन्नो जी हठ कीनो बड़ो भारी, पंडित जी मन में सलाह विचारी। थें तो भरलावो जल की झारी, पेलां स्नान करी लीजो सारी।।6।। धन्नो भक्त।।
धन्नो झारी लावण धाया, पंडित जी कांकरियो चुगलाया। उस पर चंदन लेप चढ़ाया, तुलसी पत्र और पुष्प चढ़ाया।।7।। धन्नो भक्त।।
धन्नो तूँ पूजा इनकी कीजे, प्रभु के चंदन तुलसी धारीने। प्रभु ने प्रेम सूँ भोग धरीजे, प्रभुरा नित उठ दर्शन कीजे।।8।। धन्नो भक्त।।
यूँ के के पंडित जी उठ धाया, धन्नो जी ठाकुर जी को पाया। प्रभु को चंदन पुस्प चढ़ाया, प्रभु को प्रेम से भोग लगाया।।9।। धन्नो भक्त।।
ठाकुर एक मास तक नहीं खावे, धन्नो जी प्रभु ने खूब समझावे। धन्नो जी प्रभु ने अबे सुनावे, आँखियां आँशु धार बहावे।।10।। धन्नो भक्त।।
ठाकुर तूँ भोजन नहीं करेला, धन्नो भी रोटी नहीं खावेला। धन्नो तेरे पास मरेला, धन्नो धीरज जाँहि धरेला।।11।। धन्नो भक्त।।
धन्नो जी मरने की जब धारी, अपने गल में फाँशी डारी। प्रभु तब चारभुजा– धारी, दौनुँ हाथां सूं दीनि डारी।।12।। धन्नो भक्त।।
धन्ना क्यों मरने की मनधारी, थारे निकट रहे गिरधारी। मनसा पूरण करूँ तुम्हारी, ले भोजन को करे सवाँरी।।13।। धन्नो भक्त।।
धन्नो जी चाकरी म्हाँने कोई भोला दो, मन सूं मती घबराओ। धन्नो कहे म्हाँरी धेनु चरावो, हम तो बैठो हरि गुण गावो।।14।। धन्नो भक्त।।
धन्नो केवे काँई काम भोलाऊँ, मैं तो थाँरी धेनु चरावण जाऊँ। दिन भर तेरे संग रही जाऊँ, प्रभु मैं साँझ पड़िया घर आऊँ।।15।। धन्नो भक्त।।
सुबह उठकर मोसूं पूजा करवालो, फिर तुम खीचड़ियो खालो। फेर वन में गायाँ ले चालो, दिन भर गायाँ के सँग चालो।।16।। धन्नो भक्त।।
गायाँ चारे है गिरधारी, पंडित जी मन में सलाह विचारी। करली धन्ना के गाँव के तैयारी, देखां कैसी पूजा करे पुजारी।।17।। धन्नो भक्त।।

Scanned with CamScanner

आकर धन्ना ने बतलायो, कठे तूँ ठाकुर ने बैठायो। धन्ना तूँ कैसो नेम निभायो, कैसे प्रभुनि भोग धरायो।।18।। धन्नो भक्त।।

धन्नो जब ऐसे अर्ज सुनावे, ठाकुर उठ पेलाँ पुजा करवावे। भोग लगाय धेनु चरावण जावे, वे तो साँझ पड़िया घर आवे।।19।। धन्नो भक्त।।

पंडित मन ही मन मुस्कावे, धन्नो जी तूँ म्हाँने क्यूँ बहकावे। ठाकुर भोजन कदेई नहिं पावे, और धेनु चरावण कैसे जावे।।20।। धन्नो भक्त।।

धन्नो कैणे चालो दरशण करवा दूँ, वन में चालो श्याम मिला दूँ। थाँरे मन का भर्म मिटादूँ, धेनु चरावताँ, थाँने मिलवादूँ।।21।। धन्नो भक्त।।

धन्नो जी पंडित जी भेटने चाणे, हो सी गायाँ के सँग माले। कहाँ गये मेरे कृष्ण गोपाले, दिखादे एक झाँकी बाल गोपाले।।22।। धन्नो भक्त।।

के तो दर्शन म्हाँने दीजो, नहीं तो आतमहत्या लीजो। वन में तूँ अकेलो रहीने, यूँ काँई म्हाँसूं रिसाणो कीजे।।23।। धन्नो भक्त।।

तब तो प्रगट भये खाश, मेटी अपने भक्तों की आश। भजन यूँ गावे बदरीदास, मिट गई मेरे मन की त्रास।।24।। धन्नो भक्त।।

मैं तो गाँव जो घाणें में रे वूँ, कविता भगत जनों की केवूँ। गलती हो तो माफी चावूँ, इणी विधी दर्शन की आशा पावूँ।।25।। धन्नो भक्त बड़ो तपधारी।।

## (श्री रामगुण चालिसा)

।।टेर।। जै रघुनन्दन, जै सियाराम। अवधबिहारी, जै घनश्याम।।

।।चौपाई।। भीड़ परी भक्तों ने पुकारे, कष्ट हरो प्रभु आन हमारे। तब दशरथ घर जन्मे राम, पतित पावन सीताराम।।1।। जै रघुनन्दन.....।।

ताड़क वन में ताड़का मारी, गौतम नारी अहल्या तारी। ऋषियन के भये पूरण काम, पतित पावन सीताराम।।2।। जै रघुनन्दन.....।।

हरी आपकी लीला न्यारी, पत्थर की करदीनी नारी। मेरा इससे चलता काम, पतित पावन सीताराम।।3।। जै रघुनन्दन.....।।

जनकपुरी में धनुष को तोड़ा, जनक सुता से नाता जोड़ा। कैसी सुन्दर जोड़ी राम, पतित पावन सीताराम।।4।। जै रघुन्नन्दन.....।।

परशुराम ने करी लड़ाई, अंश खींच लीनो रघुराई। सब भूपत को गाल्यो मान, पतित पावन सीताराम।।5।। जै रघुनन्दन.....।।

Scanned with CamScanner

राजतिलक की भई तैय्यारी, तब कैकेयी ने इक बात बिचारी। पिता वचन शिरधारे राम, पतित पावन सीताराम।।6।। जै रघुनन्दन.....।।

वन जाने की आग्या पाई, सीता लक्षमण संग ले जाई। तब दशरथ ने तज दिये प्राण, पतित पावन सीताराम।।7।। जै रघुनन्दन.....।।

नाव खिवैया तुम यहाँ आवो, हम तीनों को पार लगावो। चौदह बरस वन में धाम, पतित पावन सीताराम।।8।। जै रघुनन्दन.....।।

चित्रकूट पहुँचे रघुराई, भरत मुनि दरशन को आये। पँचवटी कीन्हों विश्राम, पतित पावन सीताराम।।9।। जै रघुनन्दन.....।।

जहाँ वन में हरि कुटि बनाई, वहाँ सुर्पनखा ने नाक कटाई। खर दूषन को मारे राम, पतित पावन सीताराम।।10।। जै रघुनन्दन.....।।

रावण पापी को अन्त आयो, मारीच को स्वर्ण मृग बनायो। छलकर ले गयो राम की नाम, पतित पावन सीताराम।।11।। जै रघुनन्दन.....।।

दशकंधर लंका को धायो, आन जटायु युद्ध मचायो। पंख काट दीनो हे राम, पतित पावन सीताराम।।12।। जै रघुनन्दन.....।।

मृग मार आये दौनु भाई, तब कुटियन को सुनि पाई। व्याकुल हो गये लक्षमण राम, पतित पावन सीताराम।।13।। जै रघुनन्दन.....।।

बिलख बिलाप करत मन माँहि, तब जटायू ने कथा सुनाई। हाथां कारज कीनो राम, पतित पावन सीताराम।।14।। जै रघुनन्दन.....।।

शिबरी रटत सदा रघुराई, बोर खाय लीला दिखलाई। दीन जानि अपनाई राम, पतित पावन सीताराम।।15।। जै रघुनन्दन.....।।

हनुमान ने भक्ति पाई, सुग्रीव की नारी दिलवाई। बाली को पहुँचाये धाम, पतित पावन सीताराम।।16।। जै रघुनन्दन.....।।

सिया सुधि लेन चले बजरंगी, लंका जलाय करी बैढंगी। अशोक बाग आये हनुमान, पतित पावन सीताराम।।17।। जै रघुनन्दन.....।।

कपीराज ने कीनि चतुराई, उपर से मूदड़ी छिटकाई। पीछे हकीकत कही तमाम, पतित पावन सीताराम।।18।। जै रघुनन्दन.....।।

लंका उपर करी चढ़ाई, पानी उपर शिला तिराई। रामेश्वर को थाप्यो ध ाम, पतित पावन सीताराम।।19।। जै रघुनन्दन.....।।

लंका में पहुँचे रघुराई, मंदोदरी तब अरज सुनाई। सीता देकर कर लो प्रणाम, पतित पावन सीताराम।।20।। जै रघुनन्दन.....।।

Scanned with CamScanner

तिरिया जात अकल की ओछी, कैसे देऊँ सीता पाछी। रघुवंशी को रखूँ न नाम। पतित पावन सीताराम।।21।। जै रघुनन्दन.....।।

रण संग्राम की हुई तैयारी, असुर खेलता बारी बारी। लंका में मचीयो घनशाम, पतित पावन सीताराम।।22।। जै रघुनन्दन.....।।

मेघनाद ने शक्ति बुलाई, लक्षमण को मुर्छा गति आई। वैद्य बुलाये तब ही राम, पतित पावन सीताराम।।23।। जै रघुनन्दन.....।।

काछव सुत उगणे नहिं पावे, ता पहले सरजीवनी आवे। तब हनुमान ने जेल्यो काम, पतित पावन सीताराम।।24।। जै रघुनन्दन.....।।

बड़ी काज हनुमान पठाये, द्रोणगिरी पर्वतज को लाये। भरत मुनि ने मार्‌यो बांण, पतित पावन सीताराम।।25।। जै रघुनन्दन.....।।

राम नाम जब वचन सुनिज्यो, भरत मुनि मन में पछतायो। अनरथ घोर कियो अनजान, पतित पावन सीताराम।।26।। जै रघुनन्दन.....।।

रूदन करत रघुनाथ पुकारे, नहिं बचेंगे भ्रात हमारे। अब तक नहिं आये हनुमान, पतित पावन सीताराम।।27।। जै रघुनन्दन.....।।

संजीवनी जठा घोट पिलाई, जागे प्यारे लक्षमण भाई। फिर लक्षमण में लौटे प्राण, पतित पावन सीताराम।।28।। जै रघुनन्दन.....।।

कुम्भकर्ण घननाद खरारी, हरि से युद्ध कियो बलकारी। हे मुझको शिव का वरदान, पतित पावन सीताराम।।29।। जै रघुनन्दन.....।।

फिर से लक्षमण ने करी लड़ाई मेघनाद की भुजा उड़ाई। उड़न लगी अशुरन की जान, पतित पावन सीताराम।।30।। जै रघुनन्दन.....।।

भुजा देख शुलोचना रोई, लंका में अब बचा न कोई। ये बालक उमर नादान, पतित पावन सीताराम।।31।। जै रघुनन्दन.....।।

शीस लेन शरणागत आई, मोहि ससूर ने राँड बनाई। सती होन मन लीनो ठाँन, पतित पावन सीताराम।।32।। जै रघुनन्दन.....।।

अहिरावण ले गयो रघुराई, पवनपुत्र ने करी चढ़ाई। अहिरावण को मारे राम, पतित पावन सीताराम।।33।। जै रघुनन्दन.....।।

रावण युद्ध कियो रघुराई, बीस भुजा दस शीस उड़ाई। सीता को फिर पाई राम, पतित पावन सीताराम।।34।। जै रघुनन्दन.....।।

नल नील ने करी लड़ाई, रणभुमि में जीत कराई। विभीषण को दीनो राज, पतित पावन सीताराम।।35।। जै रघुनन्दन.....।।

Scanned with CamScanner

अवधपुरी में आये रघुराई, घर घर मंगलाचार कराई। सबको दर्शन दीनो है राम, पतित पावन सीताराम।।36।। जै रघुनन्दन.....।।

सीताराम सिंहासन बैठा, माता–भ्राता नगरी से भेटा। हनुवंत छवर ढुलावे राम, पतित पावन सीताराम।।37।। जै रघुनन्दन.....।।

मनुष चरित्र लीला दिखलाई, हरि की लीला अंत न पाई। जो पावे सो पहुँचे धाम, पतित पावन सीताराम।।38।। जै रघुनन्दन.....।।

बदरीदास भजो भगवाना, हरि चरणों में ध्यान लगाना। सब का पूर्ण होवे काम, पतित पावन सीताराम।।39।।

जै रघुनन्दन, जै सियाराम। अवधबिहारी, जै घनश्याम।।

## (श्री रामचन्द्र भगवान की स्तुति)

।।टेर।। हे राम आपकी जय होवे, रघुवंश शिरोमणी जय होवे। शरणागत वत्सल जय होवे, हे अवधबिहारी की जय होवे।।

बहुनाम तुम्हारे नाथ प्रभु, में गुन हे ना अवगुन केहे। हो समदर्शी अन्तरयामी, हो नाथ आपकी जय होवे।।1।। हे राम....।।

हे कोई बात की चाह नहिं, प्रेमा भक्ति के भूखे हो। हो भुमिभार हरने वाले, हो नाथ आपकी जय होवे।।2।। हे राम....।।

कोई आप को बेच देवे तो, बिक जाते हो खुश तबीयत से। भक्तों के ताबे में रहने में, हो नाथ आपकी जय होवे।।3।। हे राम....।।

जिन किसी को किसी की शरण नहीं, उनको शरण तुम देते हो। निरआश को आशा देने में, हो नाथ आपकी जय होवे।।4।। हे राम....।।

घर आप विदुर के जाय नाथ, छोतु केले के खाये थे। शिबरी के झुठा खाय हो, हो नाथ आपकी जय होवे।।5।। हे राम....।।

जा विश्वामित्र का यज्ञनाथ, सम्पूर्ण आपने करवाया था। मुनियों का मान बढ़ाने में, हो नाथ आपकी जय होवे।।6।। हे राम....।।

ऋषि गौतम की पत्नि तारी, चरणों की रंज लगा करके। पत्थर का मनुष्य बनाने में, हो नाथ आपकी जय होवे।।7।। हे राम....।।

दुष्टों का जोर घटाने को, शिम्भु धनवा को तोड़ा था। पितु मात की अखियाँ रामचन्द्र, हो नाथ आपकी जय होवे।।8।। हे राम....।।

गुरू मात–पिता की आज्ञा को, किमपाली थी किन कष्टों से। हे सपूत राम रमा के पति, हो नाथ आपकी जय होवे।।9।। हे राम....।।

Scanned with CamScanner

जैसे जैसे ही दुष्ट हुवे, वैसा ही रूप तुमने धारा था। हो निर्गुण ओ सर्गुण रूपं, हो नाथ आपकी जय होवे।।10।। हे राम....।।

मन रूपी मानसरोवर के, शिम्भु हृदय में रहते हो। इस दास दीन पर दया करो, हो नाथ आपकी जय होवे।।11।। हे राम....।।

मरजी के दासों का नाम कहूँ, वो हनुमान शंकर तुलसी। फिर काममुशंडि नारद के, हो नाथ आपकी जय होवे।।12।। हे राम....।।

बाकी हे बहु तेरे तारे ने, कछु पार नहिं पा सकता हूँ। तुम्हारी महिमा तुम्हीं जानो, हो नाथ आपकी जय होवे।।13।। हे राम....।।

मैं तोरे विरद को सुनकर के, पास में आना चाहता हूँ। रसता दिखलादो जल्दी से, हो नाथ आपकी जय होवे।।14।। हे राम....।।

माया ने मुझको घेरा है, जो नाथ आपकी दासी है। दुख दिखा रही है, लाखों ही, छुड़ा दो तो आपकी जय होवे।।15।। हे राम....।।

बदरी तेरे नाम की माला को, दिन रात में यों ही जपता हूँ। फिर भी पार ना लगावो तो, हो नाथ आपकी जय होवे।।16।।

हे राम आपकी जय होवे, रघुवंश शिरोमणी जय होवे। शरणागत वत्सल जय होवे, हे अवधबिहारी की जय होवे।।

## (सेवा महात्म्य कीर्तन)

।।दोहा। तुलसी इस संसार में, सेवा जाने कोय। नर को वश करबो कहा, नारायण वश होय।।1।।

सेवा तें सब मिलत है, भोग मोक्ष अरू मान। सेवा बिन कछु ना मिले, सब ही थोथा ज्ञान।।2।।

।।श्लोक।। रे मन गोविन्द को ह्वे रहिये, नन्द भवन को भूषण माई। हरि सेवा अरू अकथ कहानी, वे काँसो नहिं कहिये। सुख दुख की गत भाग आपने, आन परे सोई सहिये।।1।।

शिव को धन संतन को सरबस, महिमा वेद पुराणन गाई। इन्द्र को इन्द्र देव देवन को, काल को काल अधिक अधिकाई।।2।।

यशोदा को लाल वीर हरधर को, राधा रमण सुखदाई। बदरीदास को जीवन गिरधर, गोकुल गाँव को कुँवर कन्हाई।।3।।

Scanned with CamScanner

।।चौपाई।। भज गोपाल भूल जिन जाऊँ, मानुष जनम को ये ही लाऊँ। गुरू सेवा करि भक्ति कमाई, कृपा भई तब मन में आई।।1।। यहि देह से सुमिरो देवा, देह धारि करिये प्रभु सेवा।। सुनो संत सेवा की रीति, करि कृपा मन राखो प्रीति।।2।। उठके प्रातः गुरू ने शिर नावे, प्रातः समे श्री प्रभु को ध्यावे। जो फल मांगे सोई पावे, हरि चरणन में चित्त लगावे।।3।। जिन ठाकुर को दर्शन कियो, जीवन सुफल करि लीयो। जो ठाकुर की आरती करे, तीन लोक वाँके पायन परे।।4।। जो ठाकुर को करे प्रणामा, विष्णु लोक तिन को निज धामा। जो कोई हरि को सुमिरे नामा, ताके सकल पूरण होवे कामा।।5।। जो ठाकुर को ध्यान लगावे, ध्रुव प्रह्लाद की पदवी पावे। जिन हरि को चरणामृत पीयो, विष्णुधाम अपनो घर कियो।।6।। जो हरि आगे वाद्य बजावे, तीन लोक रजधानी पावे। जो जन हरि को ध्यान लगावे, गर्भवास में कबहूँ न आवे।।7।। जो हरि को नित करे श्रृंगारा, ताको पूरण हो स्वीकारा। जो दर्पण ठाकुर ही दिखावे, चन्द्र सूर्य ताको शिर नावे।।8।। जो ठाकुर को तुलसी चढ़ावे, ताकी महिमा कहत न आवे। जो कीर्तन ठाकुर ही सुनावे, ताको ठाकुर निकट बुलावे।।9।। हरि मन्दिर में दीपक धरे, अंधकूप में कबहुन परे। जो ठाकुर की सेज बिछावे, निजपद पाय दास जो कहावे।।10।। पलना जो ठाकुर ही झुलावे, वैकुंठ सुख अपने घर लावे। जो ठाकुर को झुलावे डोल, नित लीला में करत किलोल।।11।। उत्सव कर मन सूं आरती करे, ता आधीन श्री हरि रहे। जो ठाकुर को भोग लगावे, सदा परम नित आनन्द पावे।।12।। जो पद दीन यशोदामात, ता सुख की कही ना जात। ग्वालन सहित गोपाल जिमावे, सो ठाकुर को सखा कहावे।।13।।

Scanned with CamScanner

जो ठाकुर को स्वाद करावे, सो ताको फल तब ही पाये। श्री गोवर्धन की लीला गावे, चरण कमल को तब ही पावे।।14।।

श्री यमुना जल करे सो पान, सो ठाकुर के रहे निधान। जहाँ समाज वैष्णवी होवे, ताकी संगति नित प्रति होवे।।15।।

श्री भागवत सुने आनन्द करि, ताके हृदय बशे नित हरि। जो ठाकुर को देह समरपे, उत्तम श्रेष्ठ जान के अरपे।।16।।

जिन हरि की गागरी भरि आंनि, तिज बैकुंठ अपनी स्थिति ठाँनि। जो ठाकुर को मिन्दर लेपे, माया ताकूँ कबहुँ न लेपे।।17।।

जो ठाकुर को सीदो बीजे, जितने तीर्थ तितने कीने। जो ठाकुर की माला पोणे, सोई परम भक्त जित होवे।।18।।

जो ठाकुर को चंदन लगावे, त्रिविध ताप संताप मिटावे। जो ठाकुर को पात्रन धोवे, सदा सर्वदा निर्मल होवे।।19।।

जो हरि किर्तन मुख सूं करे, मुक्ति चारहूँ पाँयन परे। जो सेवा में आलस करे, कुकर ह्वे के फिरी फिरी मरे।।20।।

मनसा जो सेवा आचरे, जब ही सेवा पुरी परे। सेवा को आश्रम करी रहे, दुख सुख वचन सबन को सहे।।21।।

जो सेवा में आलस लावे, जो जड़ जनम प्रेत को पावे। वेद पुराणन में यौं भाख्यो, सेवा को फल बृजवासिन चाख्यो।।22।।

सेवा की यह अद्भुत रीति, श्री बिट्ठलेश सों राखे प्रीति। श्री आचार्य प्रभु प्रगट बताई, कृपा भई तब मन में आई।।23।।

सेवा को फल कह्यो न जाई, सुख सुमिरे श्री बल्लभराई। सेवा को फल मेवा पावे, बदरीदास प्रभु हृदय समावे।।24।।

## (आरती श्री धन्ना जी की)

जय श्री भक्त धन्ना, थांने प्रभु सूं हेत घणां।
त्रिभुवनपति वश कीना त्रिभुवन पति वश कीना, भोला बाल पना।।टेर।।
नहीं सुनी रामायण गीता, नहीं तीरथ नाया धन्ना नहीं तीर्थ नाया।
पाँच बरस में बदली पाँच बरस में बदली, कँचन सी काया।।1।।
जय श्री भक्त।।

Scanned with CamScanner

बाजरिया रो सोगरो, ठाकुर भोग धरे धन्ना ठाकुर भोग धेर।
शालिग्राम न जिमिया, भुखा आप मरे।।2।। जय श्री भक्त।।
घणी घणी गरजां कर थकिया, नेंणा सूं नीर पड़े धन्ना नेंण सूं नीर पड़े।
चार भुजा धर प्रगटे चार भुजा धर प्रगटे, जीमें आप खड़े–खड़े।।3।।
जय श्री भक्त।।
भोली भाली भक्ति से, भगवत काज सरे धन्ना भगवत काज सरे।
गैय्याँ चरावे मोहन गैय्याँ चरावे मोहन, वन में साथ फिरे।।4।।
जय श्री भक्त।।
बीना बीज खेती निपज़ाई, ताजुब लोग करे, धन्ना ताजुब लोग करे,
भक्ताँ को रखवालो भक्ताँ को रखवालो, खेती हरी करे।।5।।
जय श्री भक्त।।
गुरू आपरा रामानन्द जी, शोभा जगत करे धन्ना शोभा जगत करे।
समरथ सतगुरू पाया, समरथ सतगुरू पाया, ग्यान भंडार भरे।।6।।
जय श्री भक्त।।
चन्द्र चाकर हूँ भक्ताँ को, कोई धन्ना को यश गावे स्वामी
कोई धन्ना को यश गावे। जो कोई धन्ना जी की आरती गावे,
भक्ति मुक्ति पावे।।7।। जय श्री भक्त।।

शुभमस्तु श्रीरस्तु

Scanned with CamScanner